www.thearyasamaj.org

ओ३म्

ऋषिमना यः ऋषिकृत् स्वर्षाः (साम. ११७६)

हम ऋषिमना होकर प्रभु की प्रभा को प्राप्त करें।

श्री जिज्ञासु स्मारक पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी का मुखपत्र

महर्षि पाणिनि-प्रभा

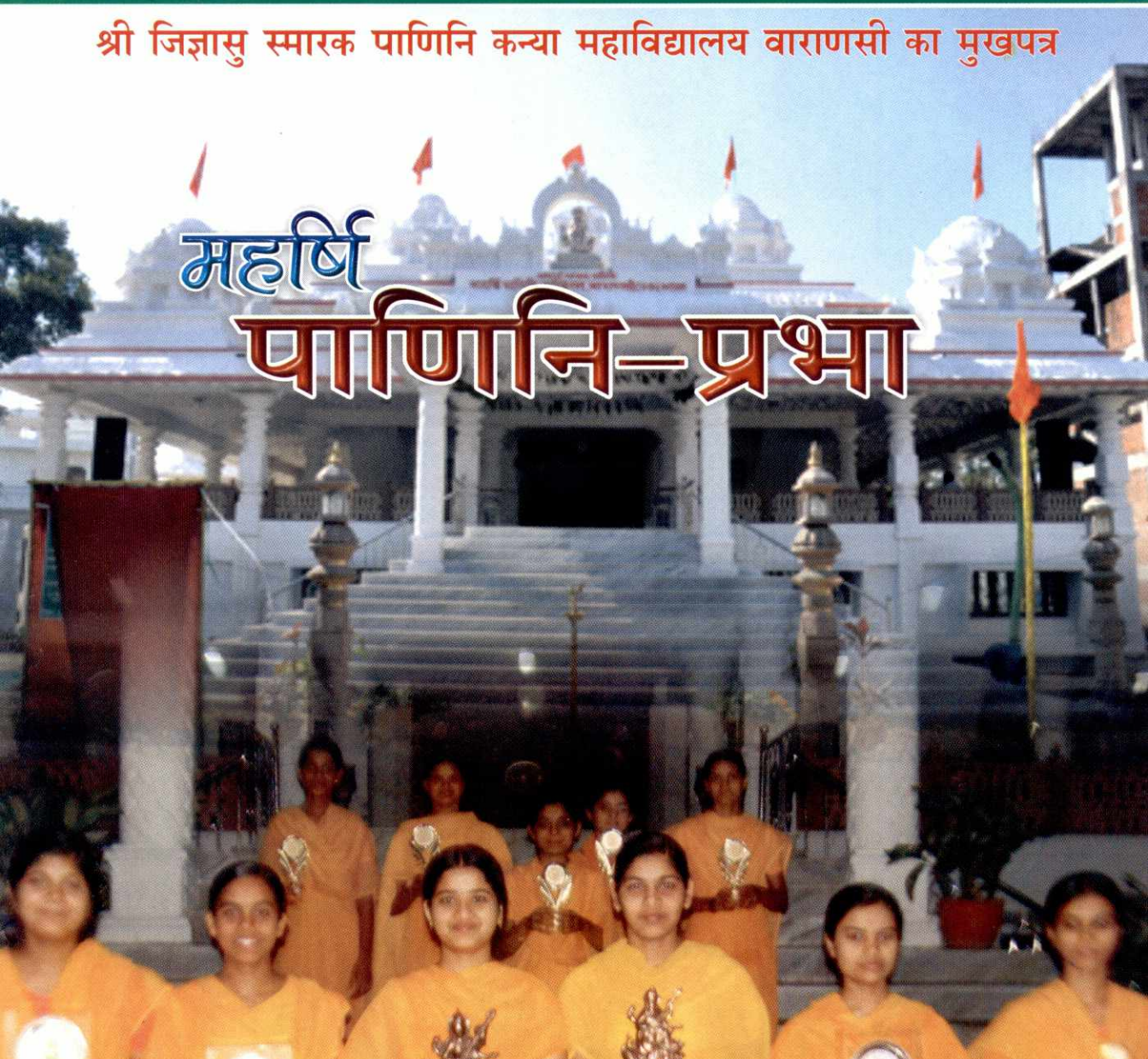

2013 वर्षीय विभिन्न प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत ब्रह्मचारिणियाँ

www.thearyasamaj.org

27–29 सितम्बर आर्य समाज माडल टाउन पठानकोट के वार्षिकोत्सव पर जन समुदाय को सम्बोधित करती उपाचार्या डॉ. प्रीति विमर्शिनी

पठानकोट में वार्षिकोत्सव पर आर्य समाज के नवनिर्मित द्वार का उद्घाटन करते समाज के संरक्षक श्री संदीप मित्तल एवं वरि. अधिवक्ता श्री रमणपुरी जी को सम्मानित करतीं उपाचार्या डॉ. प्रीति विमर्शिनी

गुरुकुल पौंधा देहरादून में 12 जून को दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा आयोजित विद्वद्गोष्ठी में उत्तराखण्ड के राज्यपाल के साथ आचार्या नन्दिता शास्त्री जी तथा अन्य विद्वज्जन।

आर्य समाज अशोक विहार दिल्ली में आचार्या नन्दिता शास्त्री जी को सम्मानित करती हुईं प्रधाना जी

आर्य समाज अशोक विहार दिल्ली में वेदपाठी ब्रह्मचारिणियों को ऋग्वेद संहिता प्रदान करती हुईं श्रीमती रचना आहूजा जी

www.thearyasamaj.org

ओ३म्

महीयसी संस्थापिका
डॉ० प्रज्ञा देवी जी

पूज्य गुरुवर्य
श्री पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जी

महीयसी संस्थापिका
अनुजा-आचार्या मेधा देवी

महर्षि पाणिनि-प्रभा

सृष्टि संवत् १,९७,२९,४९,११४	संयुक्तांक अप्रैल–सितम्बर, २०१३	वर्ष ७, अंक–२	वैशाख–आश्विन, वि.सं. २०७०

सम्पादिका
आचार्या नन्दिता शास्त्री चतुर्वेदी
मो० - 9235539740

◆

सहसंपादिका
डा० प्रीति विमर्शिनी
मो० - 9235604340

◆

प्रकाशक
पाणिनि कन्या महाविद्यालय
पो० - महमूरगंज, तुलसीपुर,
वाराणसी– 221010 (उ०प्र०)
फोन : (0542) 6544340

◆

पत्रिका सदस्य
वार्षिक : 150/-
आजीवन : 1500/- (दस वर्ष)

प्रभा–रश्मय:

1. **वेद-वाणी–** मित्राय हव्यं घृतवज्जुहोत– – आचार्या नन्दिता शास्त्री 2–4
2. **सम्पादकीयम् –** बिना अपराध आजीवन...– – आचार्या नन्दिता शास्त्री 5–8
3. **इतिवृत्तम्** – डा0 प्रीति विमर्शिनी 9–11
4. **विजयादशमी (एक चिन्तन)–** – डा. प्रीति विमर्शिनी 12–13
5. **भाषा के उद्भव एवं विकास में..... –** – आचार्या नन्दिता शास्त्री 14–16
6. **भूला क्यों इतिहास है!–** – अखिलानन्द पाण्डेय अखिल –17
7. **पाणिनि कन्या महाविद्यालय में ...–** – आचार्या नन्दिता शास्त्री 18–19
8. **मोक्ष दायिनी निर्मल गंगा–** – डॉ0 (श्रीमती) आशालता सिंह 20–21
9. **ब्राह्मण सावधान!–** – डा. सम्पूर्णानन्द 22–23
10. **हमारा ज्योतिष और धर्मशास्त्र –** – आचार्य हरिहर पाण्डेय 24–27
11. **शास्त्र के साथ शस्त्र की भी शिक्षा–** – प्रज्ञा त्रिपाठी –28
12. **हर्ष समाचार–** –29
13. **सामान्य रोगों की सुगम चिकित्सा–** – डॉ0 अजीत मेहता 30–33
14. **स्वतन्त्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका –** आशा रानी व्होरा 34–37
15. **हम भारत से क्या सीखें? –** – प्रो0 मैक्समूलर 38–40

◆

यह पत्रिका **sangamanee.com** पर आनलाईन उपलब्ध है।

www.thearyasamaj.org

वेद-वाणी

ऋचा स्तोमं समर्धय–

इमं नो देव सवितर्यज्ञं प्रणय देवाव्यं सखिविदं सत्राजितं धनजितं स्वर्जितम्।
ऋचा स्तोमं समर्धय गायत्रेण रथन्तरं बृहद् गायत्रवर्त्तनि स्वाहा॥

(यजु. 11/8)

यह यजुर्वेद का मन्त्र है। यजुर्वेद कर्म का वेद है। संसार का श्रेष्ठतम कर्म यज्ञ है। हम यज्ञिय बनें। परमेश्वर परमपुरुष है वह यज्ञरूप है वह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का नियन्ता है। उसने सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के सभी पदार्थों को यज्ञकर्म में प्रवृत्त किया हुआ है वे सभी परमेश्वर के व्रत में गमन कर रहे हैं। अग्नि, वायु, सूर्य, चन्द्र, ग्रह, उपग्रह, काल, ऋतुयें, नदियाँ, सागर, पर्वत, वृक्ष, ओषधि, वनस्पति, पशु-पक्षी, कीट-पतंग सब परमेश्वर की आज्ञा में वर्त्तमान अपने गुण कर्म स्वभाव को न छोड़ते हुए जिसको जिस कर्म में नियुक्त किया गया है वह उसी कर्म में सतत प्रवृत्त रहते हुए निरन्तर यज्ञ कर रहा है केवल एक प्राणी मनुष्य को छोड़ कर। परमेश्वर ने मनुष्य को वेदज्ञान देकर उसे सर्वसाधन सम्पन्न बना कर उसको अपना योग्य सखा बता कर उसे उसके हाल पर छोड़ दिया है वह चाहे तो देव बने चाहे तो असुर।

प्रस्तुत मन्त्र में उसी श्रेष्ठतम कर्म का वर्णन है जिसे सबको जानना चाहिये और अपने जीवन में धारण करना चाहिये। मन्त्र में प्रार्थना की गई है कि हे **देव सवितः**! हे सर्वप्रेरक सविता देव **नः इमं यज्ञं प्रणय** आप हमें इस यज्ञ को प्राप्त कराओ। प्रश्न होता है किस यज्ञ को? तो समाधान दिया– **देवाव्यं सखिविदं सत्राजितं धनजितं स्वर्जितम्** ये पाँच विशेषण हैं यज्ञ के, जिनसे यज्ञ की पाँच विशेषताओं का पता लगता है। सर्वप्रथम– **देवाव्यम्**, इस की व्युत्पत्ति है– **देवान् अवति इति देवावीः तम् देवाव्यम्** (देव+अव+ई, अवितृस्तृतन्त्रिभ्य ईः उणादि. 3/158)

अर्थात् जो देवों को प्राप्त कराता है, तृप्त करता है, हमारे अन्दर देवत्व की दान की, परोपकार की भावना को संरक्षित करता है वह यज्ञ देवाव्य है, **देवयज्ञ** का यही लाभ है। **देवो दानाद्वा**-देवों की पहचान दान से है, और दान चाहे श्रद्धा से हो या अश्रद्धा से दोनों अवस्थाओं में फलीभूत होता है यह दान धर्म की बहुत बड़ी विशेषता है। इसीलिये तैत्तिरीय उपनिषद् में कहा– **श्रद्धया देयम् अश्रद्धया देयम्, श्रिया देयम् ह्रिया देयम् भिया देयम् संविदा देयम्।**

अर्थात् श्रद्धा से अश्रद्धा से भय से लज्जा से जैसे भी हो दान करो अपनी कमाई का दशमांश दसवाँ भाग दान हेतु निकालो। यह उपदेश उस ब्रह्मचारी को दिया गया है जो विद्याध्ययन समाप्त करके अपने घर जा रहा है वह अब गुरुकुल से निकल कर गृहस्थाश्रम में प्रवेश करेगा धनार्जन करेगा तो उसे अन्य उपदेशों के साथ आचार्य यह अन्तिम ऐतिहासिक उपदेश जो कि जीवन के हर काल में हर देश में हर जाति के

www.thearyasamaj.org

लोगों के लिये सार्वभौम है। जिसे हर गृहस्थी को मानना और स्वीकार करना चाहिये। मेरे द्वारा उपार्जित सब कुछ मेरा ही नहीं है। यदि आप एक लाख कमाते हैं तो दस हजार दान के निमित्त अवश्य निकालिये। परमेश्वर के सृष्टि यज्ञ में यही चल रहा है एक बीज से एक वृक्ष उत्पन्न होकर एक नहीं हजारों फल व बीज उत्पन्न कर देता है। हम यज्ञ के निमित्त जो भी आहुतियाँ डालते हैं वह हजार गुना में परिवर्त्तित होकर लाभदायक होती हैं इस रहस्य को हमें समझना होगा। यज्ञ में बार-बार **इदं न मम** यह मेरा नहीं है कह कर आहुति देना त्याग की भावना को ही परिपुष्ट करता है।

दूसरा विशेषण है– **सखिविदम्**। इसकी व्युत्पत्ति है– **सखायो विद्यन्ते यस्य सखीन्वा विन्दते यस्स सखिवित् तम् सखिविदम्**। अर्थात् यह यज्ञ ऐसा है जिसके बहुत से सखा (मित्र) हैं क्योंकि ब्रह्माण्ड के सभी पदार्थ उस परमेश्वर की आज्ञा में सतत यज्ञ कर रहे हैं। जिसे भी देखो अग्नि, वायु, सूर्य, चन्द्र, जल, नदियाँ, पशु-पक्षी, वृक्ष-वनस्पति सब स्वार्थ रहित होकर स्वाहा जो कि यज्ञ की आत्मा है उस त्याग की भावना से लगे हुए हैं वे सब इस यज्ञ के सखा हैं। ऐ मनुष्य! तू भी इस यज्ञ को अपना कर परमेश्वर की आज्ञा का पालन कर परब्रह्म का प्रकृति का सखा बन जायेगा। सोच लीजिये अपने जीवन में स्वार्थ रहित होकर आप जिस निमित्त त्याग करेंगे वह आपका अपना तो हो ही जायेगा। आप **अतिथि यज्ञ** करके तो देखें।

तीसरा विशेषण है– **सत्राजितम्**। सत्रा शब्द वैदिक शब्दकोश (निघ. 3/10) में सत्य का वाची है। **सत्रा सत्यं ब्रह्म यो जयति स सत्राजित् तम् सत्राजितम्**। यह यज्ञ सत्यस्वरूप परब्रह्म को प्राप्त कराने वाला है। **ब्रह्मयज्ञ** का यही लाभ है जो नियमित सन्ध्योपासना करते हैं वे उस ब्रह्म को प्राप्त कर लेते हैं मानो उसे जीत लेते हैं। वह परमेश्वर सत्य स्वरूप है **सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म**।

चौथा विशेषण है– **धनजितम्**। इसकी व्युत्पत्ति में यजुर्वेद भाष्यकार उव्वट महीधर लिखते हैं– **धनं यो गवादि जयति स धनजित् तम् धनजितम्**। इस यज्ञ को करने वाला धन का जयी होता है। धन के कई प्रकार हो सकते हैं विद्यार्थी का धन विद्या है ब्राह्मण का धन ब्रह्म है गृहस्थी का धन उत्तम प्रजा है आदि आदि। हिरण्य सुवर्णादि को भी धन कहते हैं, भूस्वामी भी होते हैं, पशु भी धन होता है उसके स्वामी गोपति होते हैं। यज्ञ बिना गाय के बिना गोघृत के सम्पन्न नहीं हो सकता है। यह यज्ञ मनुष्य को गोपति बनाता है **बलिवैश्वदेव यज्ञ** इन्हीं के निमित्त किया जाता है।

पाँचवाँ विशेषण है– **स्वर्जितम्। स्वः सुखं जयति यस्स स्वर्जित् तम् स्वर्जितम्**। यह यज्ञ स्वर्लोक को प्राप्त कराने वाला उस पर विजय देने वाला है। स्वः का अर्थ है सुख। संसार में सब सुख चाहते हैं कोई भी दुख नहीं चाहता। सब अपने-अपने तरीके से सुख की प्राप्ति के लिये प्रयत्नशील हैं पर सुख है क्या इसे कोई भली प्रकार नहीं जानता। भौतिक सुख को ही सबने सुख मान लिया है भौतिक वैभव और समृद्धि को ही सबने समृद्धि मान लिया है। पर आँख तब खुलती है जब वे समृद्ध पुरुष भी बेचैन दिखाई देते हैं और अच्छा पैकेज पाने वाले भी आत्महत्या के लिये प्रयासरत होते हैं उन्हें नहीं पता सुख का निधान सुख

www.thearyasamaj.org

का सागर तो मेरे हृदय में अन्तर्यामी बनकर बैठा है। **यो वै भूमा तत्सुखम्** उपनिषदों में बताया जिसको प्राप्त करके कुछ और देखने सुनने जानने प्राप्त करने की इच्छा शेष न रहे वही सुख है और उसका अधिष्ठाता परब्रह्म है। यह यज्ञ हमें अध्यात्म से जोड़ता है। **स्वर्गकामो यजेत** स्वर्ग की कामना वाला यज्ञ करे यह कहने का तात्पर्य यही है कि इस यज्ञ के द्वारा हम उस परब्रह्म को प्राप्त करने के अधिकारी बनें। भगवान् को किसी ने नहीं देखा घर बैठे आपके वृद्ध माता-पिता ही भगवान् का असली रूप हैं। पितृयज्ञ के द्वारा उनका प्रतिदिन श्राद्ध तर्पण कर हम स्वर्ग की कामना को पूर्ण कर सकते हैं। बच्चे आज्ञाकारी होंगे हमारा घर स्वर्ग बन जायेंगे।

आगे मन्त्र में यह यज्ञ कैसे समृद्ध होगा उसका उपाय बताया कि– **ऋचा स्तोमं समर्धय** अर्थात् ऐ मनुष्यो! यदि तुम इस यज्ञ को प्राप्त करना चाहते समृद्ध करना चाहते हो तो मन्त्रों के द्वारा स्तुति करो वेद मन्त्रों को अपना आधार बनाओ तदनुसार अपनी जीवन शैली को रचाओ और गायत्री मन्त्र का जप करो– **गायत्रेण रथन्तरं** उसी के द्वारा तुम्हारी जीवन नैया पार होगी तुम्हारे जीवन का उद्देश्य पूर्ण होगा। गायत्र और रथन्तर ये सामगान हैं गायत्र सामगान के साथ रथन्तर गान को समृद्ध करो यह वेद की आज्ञा है। बड़े-बड़े यज्ञों में उद्गाता के द्वारा विभिन्न सामगान करने का विधान है। वहाँ ब्रह्मा होता अध्वर्यु उद्गाता इन चारों ऋत्विजों की आवश्यकता होती है प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन यज्ञ का स्वयं ब्रह्मा, होता, अध्वर्यु और उद्गाता है।

यज्ञ में तीन सवन होते हैं जिनमें गायत्र को प्रातःसवन कहा है– **गायत्रं प्रातः सवनम्**। (छा.उ. 3/16) गायत्री (छन्द) 24 अक्षरों का होता है। मनुष्य जीवन के आरम्भिक 24 वर्ष प्रातःसवन के समान हैं जिसमें प्राणों की आहुति अपान में दी जाती है। **गायत्री वासन्ती** (यजु. 13/54) गायत्री का सम्बन्ध वसन्त ऋतु के साथ है। मेरे जीवन का आरम्भिक वय भी वसन्त ऋतु के समान सदा बहार से युक्त हो। इसी यजुर्वेद में कहा–

प्राचीमारोह गायत्री त्वाऽवतु रथन्तरं साम त्रिवृत्स्तोमो वसन्त ऋतुर्ब्रह्म द्रविणम्॥

(यजु. 10/10)

हे यजमान! जीवन यज्ञ के होता तू प्राची (पूर्व) दिशा का आरोहण कर पूर्व दिशा में उगते सूर्य के समान सतत उन्नति पथ पर अग्रसर हो। यह गायत्री तेरी रक्षा करेगी, रथन्तर साम तेरी रक्षा करेगा, त्रिवृत् स्तोम तेरी रक्षा करेंगे वसन्त ऋतु तेरी रक्षा करेगी द्रविण रूप ब्रह्म तेरी रक्षा करेगा। द्रविण का अर्थ धन होता है ब्रह्मचारी का धन ब्रह्म है।

मन्त्र में कहा– **गायत्रेण बृहत्** इसी गायत्र साधना से तू बृहत् साम को प्राप्त करेगा। **गायत्रवर्त्तनि** यह गायत्र साम ही तेरी वर्त्तनि है तेरा मार्ग है तेरा पथ प्रदर्शक है इसी को अपनी वर्त्तनि (मार्ग) बनाओ। **स्वाहा** और अन्त में इसके प्रति अपना आत्म समर्पण (त्याग) करो परिणाम तेरे जीवन में सदा वसन्त सदा बहार होगा और हम मन्त्र में प्रतिपादित पाँच विशेषताओं से युक्त पञ्च महायज्ञ को प्राप्त करने वाले बन सकेंगे।

● **– आचार्या नन्दिता शास्त्री**

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीयम्

बिना अपराध आजीवन कारावास–

अभी इसी वर्ष 27 मई 2013 को जब सुलभ इण्टर नेशनल सोशल सर्विस आर्गनाइजेशन नई दिल्ली द्वारा सुलभ के संस्थापक **डा. बिन्देश्वर पाठक** के नेतृत्व में– **विधवा जीवन– बिना अपराध आजीवन कारावास** इस विषय पर एकदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन काशी विद्यापीठ वाराणसी में किया गया। जिसके प्रथम सत्र में **विधवा जीवन– धर्मशास्त्रीय दृष्टि** पर **प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय** अध्यक्ष, शोध एवं प्रकाशन विभाग श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली की अध्यक्षता में विषय की उपस्थापना के लिये **डा. कामेश्वर उपाध्याय**, संयोजक, अखिल भारतीय विद्वत्परिषद्, वाराणसी को आमन्त्रित किया गया और काशी के अनेक विद्वानों के बीच इस गोल मेज कान्फ्रेंस में जब मैं वहाँ पहुँची तो डा. कामेश्वर उपाध्याय जी ने लगभग जबर्दस्ती ही मुझे अपने पास यह कह कर बुला लिया कि अरे! धर्मशास्त्रीय दृष्टि पर विवेचन है! आपका रहना तो आवश्यक है, मैं सहज भाव से बैठ गई। सत्र आरम्भ हुआ, डा. उपाध्याय जी ने बड़े गर्म जोशी के साथ विषय का उपस्थापन किया और कहा कि धर्मसिन्धु में पूरा एक पेज विधवाओं पर है वहाँ विधवाओं को बहुत ही सम्मान दिया गया है उन्हें ब्रह्मचारी का स्थान दिया गया है। जिस प्रकार एक ब्रह्मचारी विषयपराङ्मुख होकर तपस्या पूर्वक जीवन व्यतीत करता है उसी प्रकार विधवाओं को भी अपना जीवन व्यतीत करना चाहिये वे चाहें तो मोक्ष के लिये भी प्रयत्नशील हो सकती हैं आदि आदि।

पुरुष प्रधान इस सभा व समाज में मुझे आमन्त्रित तो कर लिया गया था पर कुछ विचार व्यक्त करने का समय देना आयोजकों के लिये कठिन ही नजर आ रहा था। मैंने विषय उपस्थापक महोदय के वक्तव्य पर मुझे प्रश्न करना है यह कह कर समय मांगा तो बड़ी कठिनाई से संयोजक महोदय **डा. ब्रह्मानन्द चतुर्वेदी** ने केवल 5 मिनट कह कर मुझे माइक थमा दिया। जबकि इस संगोष्ठी के समायोजक **डा. बिन्देश्वर पाठक** ने विरोध करते हुए कहा– नहीं ये जितना बोलना चाहें, इन्हें बोलने का समय दिया जाये। मैं खड़ी हुई मैंने कहा– मैं पूछना चाहती हूँ अपने विषय उपस्थापक महोदय, अखिल भारतीय विद्वत्परिषद् के संयोजक डा. कामेश्वर उपाध्याय जी से कि विधवाओं के लिये ही ब्रह्मचारियों जैसा तपस्वी जीवन क्यों? विधुरों के लिये क्यों नहीं? विधुर क्यों नहीं मोक्ष की अभिलाषा और उसके लिये यत्नशील हों? आज समाज में बहुत से परिवर्त्तन हुए हैं, हो रहे हैं, अभी इसी सभा में जिन कन्याओं को वेद पढ़ना तो दूर उन्हें वेदमन्त्र सुनने तक की आज्ञा नहीं थी यदि वे सुन लेंगी तो विधवा हो जायेंगी आदि बातें प्रचारित थीं आज उसी सभा

www.thearyasamaj.org

में आप सब विद्वानों के मध्य अपने पाणिनि कन्या महाविद्यालय की ब्रह्मचारिणियाँ वैदिक मंलगाचरण करके गईं, आप सबने सुना, मुग्ध हुए, आपने इसे स्वीकारा। उसी प्रकार अन्य सामाजिक धार्मिक परिवर्त्तन भी हम क्यों नहीं स्वीकार कर लेते? आज आवश्यकता है, हम ऐसे परिवर्त्तनों को स्वीकार कर लें। आप सब विद्वत्समाज के अधिकारी यहाँ बैठे हैं इससे अच्छा अवसर और क्या होगा?

मैंने उन्हें बताया कि पिछले वर्ष महिलाओं को कर्मकाण्ड कराने का अधिकार है या नहीं इस विषय पर जी. न्यूज चैनल द्वारा वीडियो कांफ्रेंस कराई गई जिसमें एक तरफ मैं थी दूसरी तरफ नोएडा (गाजियाबाद) में **पं. अशोक द्विवेदी**, वे कह रहे थे यदि स्त्रियाँ मन्त्रोच्चारण करेंगी तो एक टेक्नीकल प्राब्लम आयेगी। वह क्या? मेरे पूछने पर उन्होंने कहा कि– फिर स्त्रियाँ पुत्रवती नहीं होंगी। फिर वे बोले– यदि सभी धर्माचार्य शङ्कराचार्य मिल कर निर्णय सिन्धु और धर्मसिन्धु में परिवर्त्तन कर दें तो मैं महिलाओं के वेदाध्ययन व कर्मकाण्ड कराने की बात को स्वीकार कर लूँगा। मैंने कहा **क्या आपके धर्मसिन्धु निर्णयसिन्धु ग्रन्थ वेद से ऊपर हैं? क्या आपके शंकराचार्य जी भगवान् से ऊपर हैं?** जिन्होंने स्पष्ट रूप से वेदों को स्वतः प्रमाण व अन्य ग्रन्थों को परतः प्रमाण वेदों के अनुकूल होने पर ही प्रमाण माना है। फिर भी आप लोगों का यह दुराग्रह! आखिर क्यों? यह धार्मिक उत्पीड़न है जो धर्मशास्त्र के नाम पर आज भी विद्वानों द्वारा प्रचारित व मान्य होता आ रहा है। कहने को ब्रह्मचारी जैसा सम्मान विधवाओं को दिया गया है पर व्यावहारिक तौर पर किसी भी मांगलिक कार्य में क्या विधवाओं को आमन्त्रित या सम्मिलित किया जाता है? नहीं, यहाँ तक कि स्वयं अपनी बेटी का कन्यादान करने में एक माँ हिचकती है समाज के धर्म के भय से वह इस अवसर पर चाचा-चाची, मामा-मामी मौसा-मौसी, भैया-भाभी आदि किसी अन्य सम्बन्धी को इस कार्य के लिये आगे कर देती है। बात करते हैं ब्रह्मचारियों जैसे सम्मान की! क्या आज तक किसी विधवा को ब्रह्मचारियों के समान सम्मान पूर्वक विशेष रूप से ऐसे कार्यक्रमों में आमन्त्रित किया गया है? कभी नहीं। महामहोपाध्याय **प्रो. शिवजी उपाध्याय** जो राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त काशी विद्वत्परिषद् के महामन्त्री हैं वे भी उस सभा में उपस्थित थे वे मेरे खड़े होते ही यह कहते हुए मेरे सामने से गुजरे कि आपका समय हो गया है आप अपनी बात को संक्षिप्त करिये, कहने का मतलब महिलाओं के अधिकार पर एक महिला का वह भी विदुषी महिला का बोलना उन्हें अच्छा नहीं लग रहा था, अखर रहा था।

मैं तो कहूँगी धन्य हैं आधुनिक युग के महान् क्रान्तिकारी, समाज के नायक, सुलभ के संस्थापक **डा. बिन्देश्वर पाठक जी** जिन्होंने न केवल मैला ढोने वाली महिलाओं की वकालत कर उन्हें सामान्य जनजीवन में ढाला, उन्हें देश ही नहीं विदेश तक की यात्रा करा दी, राष्ट्रपति भवन तक पहुँचा दिया, काशी विश्वनाथ मन्दिर में घुसा दिया, ब्राह्मणों के साथ उनका सहभोज करा दिया अपितु इसी क्रम में पिछले वर्ष विधवा

www.thearyasamaj.org

महिलाओं की दुर्दशा को देखते हुए इलाहाबाद हाई कोर्ट के कहने पर मथुरा वृन्दावन काशी की हजारों विधवा महिलाओं को भी नारकीय जीवन से उबार कर उन्हें प्रतिमास 2000/ रु. तक की सहायता राशि एम्बुलेन्स चिकित्सा आदि की सुविधा तत्काल देकर उन्हें भी सामान्य जीवन जीने का, होली खेलने आदि का सौभाग्य प्रदान कर दिया। इस सभा में उन्होंने इसी मुद्दे को विशेष रूप से उठाकर पण्डितों से अपेक्षा की कि विधुरों के समान इन्हें भी पुनर्विवाह करने, सौभाग्यपूर्ण जीवन जीने की अनुमति प्रदान करें तथा तदनुकूल धार्मिक ग्रन्थों में भी परिवर्त्तन करें। कहते हैं **समरथ को नहीं दोस गुसाईं** तो ये पाठक जी तो ब्राह्मण भी हैं समृद्ध भी इसलिये सब पण्डित यहाँ एकत्रित भी हुए और दक्षिणा का लाभ भी प्राप्त किया अन्यथा भगवान् ही मालिक है इन पोंगापन्थी धर्मभीरु पण्डितों का।

महिला उत्पीड़न कारण एवं निवारण

लगभग यही विषय **महिला उत्पीड़न कारण एवं निवारण** पर इसी 28 जुलाई, रविवार 2013 को बनारस क्लब में भारत विकास परिषद् काशी प्रान्त द्वारा महिला समागम का आयोजन किया गया। जिसमें विशिष्ट अतिथि के रूप में मुझे आमन्त्रित किया था। मुझे बहुत अच्छा लगा जब काशी प्रान्त के विभिन्न शाखाओं से महिलाओं ने भी अपने लिखित विचार इस विषय पर रखे इससे पूर्व भी इसी प्रकार का आयोजन बड़े उत्साह से भारत विकास परिषद् के सभी भाई बहिनों ने मिल कर किया था तब भी मुझे ही निर्णायक व विशिष्ट अतिथि के रूप में आमन्त्रित किया था। अस्तु।

वहाँ मैंने यही विचार रखे कि यद्यपि– महिला उत्पीड़न के कई प्रकार हो सकते हैं– (1) शारीरिक उत्पीड़न (2) मानसिक उत्पीड़न (3) मौखिक उत्पीड़न (4) यौन उत्पीड़न (5) पारिवारिक उत्पीड़न (6) सामाजिक उत्पीड़न (7) धार्मिक व सांस्कृतिक उत्पीड़न आदि आदि। ये सभी उत्पीड़न जो कि कभी दहेज की बलि वेदी, कभी सती प्रथा, कभी भ्रूणहत्या, कभी बालविवाह, कभी विधवा जीवन, कभी बलात्कार आदि के रूप में विकराल रूप धारण करते रहते हैं जिसके विषय में हम प्रायः समाचार पत्रों में पढ़ते व विभिन्न न्यूज चैनलों में देखते रहते हैं। आज सुशिक्षित समाज में जो कुछ हो रहा है वह अत्यन्त ही निन्दनीय दिल को दहला देने वाला व बीभत्स है, आज दरिन्दे क्या कर गुजरेंगे नहीं कहा जा सकता है।

पर प्रश्न होता है यह स्थिति कब से उत्पन्न हुई? क्यों उत्पन्न हुई? क्या जब से इस धरती पर मानव ने जन्म लिया है तब से यह विभेद यह उत्पीड़न नारियों के साथ होता आ रहा है? नहीं। तो इधर कुछ सौ वर्षों से जब से बाहरी (मुस्लिम आदि) आक्रमण आरम्भ हुये तभी से धीरे-धीरे यह स्थिति उत्पन्न हुई। बाहर के आक्रान्ताओं से नारियों को सुरक्षित रखने के लिये उन्हें पर्दे में रखने का उपक्रम किया गया और धीरे-धीरे उन्हें घर की चारदिवारी में कैद कर दिया गया। अब वे बाहर नहीं निकल सकती थीं, नहीं पढ़ सकती

www.thearyasamaj.org

थीं। उन पर प्रतिबन्ध थोपे जाने लगे यहाँ तक कि वे सूरज की रोशनी भी नहीं देख सकती थीं उन्हें **असूर्यम्पश्याः** कहा जाने लगा।

बात यहीं तक रहती तो भी ठीक था पर नहीं धर्माचार्यों ने तो लिखित रूप से नारी को नरक का द्वार बता दिया– **द्वारं किमेकं नरकस्य? नारी**, नरक का द्वार कौन है तो नारी। उन्होंने तो बाल विधवा और सती प्रथा के समर्थन में वेद मन्त्रों में परिवर्तन करने तक का पाप कर डाला। सती प्रथा के समर्थन में वे जो मन्त्र देते हैं वहाँ स्पष्ट रूप से **आरोहन्तु जनयो योनिमग्रे** (ऋ. 10/18/7) यह पाठ है, इसका अर्थ है स्त्रियाँ आगे बढ़ें यहाँ **योनिमग्रे के स्थान पर योनिमग्नौ** करके इन पण्डितों ने स्त्रियाँ अग्नि में आरोहण करें यह अर्थ कर दिया और कह दिया कि वेद में स्त्रियों के सती होने की आज्ञा है।

आज न केवल हिन्दू समाज अपितु अन्य (मुस्लिम आदि) समाज में भी नारियों को इसी प्रकार के उत्पीड़न झेलने के लिये मजबूर किया जाता है। जबकि वैदिक युग का उद्घोष था–

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः॥

अर्थात् जहाँ नारियों का सम्मान होता है वहाँ देवता निवास करते हैं और जहाँ इनकी पूजा नहीं होती वहाँ सभी क्रियायें फलरहित निष्फल हो जाती हैं। वहाँ देव तो क्या मनुष्य भी नहीं पशुओं का ही वास होता है वह समाज पशु समाज पशुबली कहलाने लगता है। इस प्रसंग में महर्षि देव दयानन्द ने स्त्रीशिक्षा का समर्थन ही नहीं किया अपितु जब लोग उनसे पूछने आये कि **यदि स्त्रियाँ वेद पढ़ेंगी तो हम क्या करेंगे?** के उत्तर में वे लिखते हैं– **तुम कुआँ में पड़ो पर इनको पढ़ने दो**। महर्षि दयानन्द के हृदय में जो वैदिक नारी की परिकल्पना थी वह पूर्ण नहीं हो सकी। मध्य में ही अन्य अंग्रेजी शिक्षा परस्त लोग इस स्त्रीशिक्षा अभियान को हवा देने लगे और समाज में नारी मुक्ति आन्दोलन की एक प्रतिक्रिया पूर्ण लहर खड़ी हो गयी। परिणामस्वरूप आज समाज में जो ताण्डव दिख रहा है उसका मूल कारण वैदिक शिक्षा का अभाव और पाश्चात्य संस्कृति का अन्धानुकरण ही कहा जा सकता है। शिक्षा के अभाव में महिलायें जब पर्दे में थीं तब भी उन्होंने परम्परा से प्राप्त ज्ञान का, मर्यादा का, पवित्रता का, सदाचार का पालन किया था और बच्चों को भी उस आचार-विचार, संस्कृति की सुशिक्षा देती थीं किन्तु अंग्रेजी शिक्षा से जो बेपर्दगी आरम्भ हुई और विकास के नाम पर जो टी.वी. चैनल मीडिया आदि के माध्यम से घर-घर गाँव-गाँव ही नहीं जंगल-पर्वत तक जो ज्ञान परोसा गया उसके लिये तो कोई शब्द ही नहीं है। दुर्गा शक्ति आराधना का पर्व नवरात्र बीत गया, नारी शक्ति के नव रूपों की जमकर आराधना हुई, घर-घर में कन्या पूजन हुआ पर नारियों पर अत्याचार कहीं से भी कम हुआ हो यह नहीं देखा गया, यह चिन्तन का विषय है।

● **– आचार्या नन्दिता शास्त्री**

www.thearyasamaj.org

इतिवृत्तम्

– डा. प्रीति विमर्शिनी

सम्पूर्ण चराचर जगत् की छोटी से छोटी बड़ी से बड़ी रचना सोद्देश्य होती है और यदि वह रचना अपने उद्देश्य की पूर्ति में असफल होती है तो उसका अस्तित्व ही समाप्त हो जाता है। जिसका निमित्त मनुष्य ही होता है। अतः मनुष्य को अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु सतत प्रयत्नशील रहना चाहिये।

इस महाविद्यालय की स्थापना का उद्देश्य भी प्राचीन आर्ष गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली को पुनरुज्जीवित कर कन्याओं को वेद-वेदाङ्ग, अष्टाध्यायी महाभाष्य, निरुक्त दर्शनादि ग्रन्थों की उत्तम विदुषी बनाना तथा प्राचीन वैदिक संस्कृति के प्रति श्रद्धावान् बनाते हुए उन्हें सच्चरित्र कर्त्तव्यनिष्ठ पूर्ण वीरांगना नारी बनाना है। इस महान् उद्देश्य के साथ स्थापित इस महाविद्यालय की नींव से लेकर सम्पूर्ण भवन की एक-एक ईंट स्थापित हुई और इसी उद्देश्य की पूर्ति में आज भी हम प्राणप्रण से लगे हुए हैं।

सहृदय महानुभाव!

विद्यालय का प्रगति विवरण जानने को आप सभी विद्यालय के सहृदय हितैषी सुचिन्तक पाठकवृन्द कितने उत्सुक रहते हैं इसे हम भली-भाँति जानते हैं पुनरपि पिछले अंक की पत्रिका हम सुधी पाठकों को उपलब्ध नहीं करा सके जिसमें विद्यालयीय विविध कार्यों की अतिव्यस्तता ही कारण रही।

वार्षिक परीक्षाओं के अनन्तर ग्रीष्मकालीन अवकाश में छः जून से 20 जून तक गंगोत्री से आमन्त्रित **डॉ. आनन्द स्वामी** जी के निर्देशन में वैदिक संस्कार संस्कृत एवं योग साधना प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया जिसमें- गया, सतना, पटना, गोरखपुर, बस्ती आदि स्थानों से सभी आयु एवं वर्ग के लोगों ने लाभ उठाया।

कन्याओं का उपनयन संस्कार–

22 जुलाई गुरु पूर्णिमा पू. आचार्या जी की जयन्ती पर पूर्ण आध्यात्मिक वातावरण में अनेक दृढ़संकल्पों एवं व्रतों के साथ आचार्या जी निर्देशन में कन्याओं का उपनयन व वेदारम्भ संस्कार हैदराबाद, मुम्बई, नेपाल, बिहार, झारखण्ड, उत्तर प्रदेश आदि विभिन्न प्रान्तों की 33 कन्याओं का उपनयन एवं वेदारम्भ संस्कार पूर्ण गरिमा गुरुता, गम्भीरता एवं भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। आचार्या जी ने इन संस्कारों की प्रत्येक क्रियाओं का महत्त्व बताते हुए पाणिनि परिसर की सभी नवीन एवं पुरातन कन्याओं को व्रतनिष्ठ सत्यनिष्ठ होने का संकल्प कराया, ब्रह्मचर्य की दीक्षा व गायत्री मन्त्र का उपदेश दिया तथा–

मम व्रते ते हृदयं दधामि, ममचित्तमनुचित्तं ते अस्तु।
मम वाचमेकमना जुषस्व बृहस्पतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम्

इस मन्त्र के माध्यम से सभी शिष्याओं को आचार्य जनों के पूर्ण अनुशासन, निर्देशन एवं संरक्षण में रहते हुए पूर्ण सच्चरित्र, वेदविदुषी, सुयोग्य, स्नातिका बनकर आर्ष परम्परा का संवहन करते हुए आचार्या जी के सपनों को साकार कराने का संकल्प कराया जिसे ब्रह्मचारिणियों

www.thearyasamaj.org

ने पूर्ण श्रद्धा एवं सत्यनिष्ठा से स्वीकार किया।

सैद्धान्तिक परीक्षायें–

विद्यालय के महान् उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए कन्याओं में वैदिक सिद्धान्त आध्यात्मिकता एवं ऋषि भक्ति के बीजों का अंकुरण कर उन्हें प्रस्फुटित एवं विकसित करने हेतु सत्यार्थ प्रकाश, दर्शन, उपनिषदादि की कक्षायें होती ही रहती हैं। इधर जुलाई अगस्त एवं सितम्बर मास में इन ग्रन्थों की परीक्षायें भी सामूहिक रूप से सम्पन्न हुईं जिसमें शास्त्री (बी.ए.) से लेकर पूर्व मध्यमा (हाई स्कूल) तक की छात्राओं ने भाग लिया परिणाम उत्तम एवं सन्तोषप्रद रहा जिसमें विद्योत्तमा (शास्त्री प्रथम वर्ष) सत्यार्थ प्रकाश, सुधा-उपनिषद्, विजया योगदर्शन (उ.म.प्र.) ने सर्वश्रेष्ठ अंक प्राप्त करके प्रथम स्थान प्राप्त किया। आगामी मासों में भी ये परीक्षायें संचालित होती रहेंगी।

प्रचार यात्रायें–

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् परमपिता के इस वैदिक आदेश का पालन करते हुए वेदोपदेश द्वारा सम्पूर्ण विश्व को आर्य बनाने का दायित्व भी हम राष्ट्र प्रहरियों पर है। अतः वैदिक प्रचार यात्रायें भी यथासमय होती ही रहती हैं इसी क्रम में– आर्य समाज वाशी मुम्बई, (आचार्या नन्दिता शास्त्री), आर्य समाज बरेली बिहारीपुर (ब्र. रजिता एवं सरिता, शास्त्री तृतीय वर्ष), आर्य समाज अशोक विहार (आचार्या नन्दिता शास्त्री), आर्य समाज माडल टाउन पठानकोट (डा. प्रीति विमर्शिनी) के ब्रह्मत्व में ये सभी यात्रायें सम्पन्न हुईं। जिसमें व्यक्ति, परिवार, समाज एवं राष्ट्र निर्माण सम्बन्धी वैदिक प्रवचनों से सभी ने लाभ उठाया।

इसी के साथ ही विविध विद्वद्गोष्ठी अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलन दिल्ली, देहरादून पौंधा एवं लखनऊ। राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान की ओर से आयोजित वैदिक सम्मेलनों में भी पूर्ण सहभागिता विद्यालय की रही। वेदाध्यापकों के लिये महर्षि सान्दीपनि वेद प्रतिष्ठान की ओर से आयोजित पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में भी आचार्या नन्दिता शास्त्री जी के विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान 2-4 सितम्बर तक सम्पन्न हुए जिससे सभी वेदाध्यापकों ने ज्ञान लाभ प्राप्त किया। स्थानीय यज्ञ, सम्मेलन एवं गोष्ठियों में तो अतिव्यस्तता हो जाती है।

विविध कार्यक्रम–

पूज्य आचार्य जनों की तपस्या एवं आशीर्वाद का ही यह प्रतिफल कहा जायेगा कि शनैः-शनैः पौराणिक बहुल काशी नगरी के स्थानीय नागरिकों का भी विगत लगभग 44 वर्षों से वैदिक संस्कृति का डंका बजाते हुए निरन्तर गतिशील पाणिनि कन्या महाविद्यालय के प्रति तथा वैदिक संस्कृत संस्कृति के प्रति आकर्षण बढ़ रहा है, लोग रुचि ले रहे हैं परिणामस्वरूप अनेक क्लब एवं संस्थायें इस विद्यालय से जुड़कर अपने को सौभाग्यशाली समझते हैं यहाँ आकर शान्ति और सन्तोष का अनुभव करते हैं। तथा प्रतिवर्ष विविध कार्यक्रमों के आयोजन सम्पन्न कराते रहते हैं। इस वर्ष भी **लायंस क्लब की विभिन्न शाखाओं** ने पन्द्रह अगस्त तथा श्रावणी पर्व पर कार्यक्रम आयोजित किये **अखिल भारतीय गो सेवा समिति** की ओर से 2 सितम्बर वत्स द्वादशी के दिन गो वत्स पूजन तथा गो संरक्षण विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

प्रख्यात सर्जन **डॉ. सुबोध सिंह** जे.एस. मेमोरियल हॉस्पिटल उनकी ओर से श्रावण मास में 19 अगस्त को **कजरी महोत्सव** का आयोजन किया जिसमें

www.thearyasamaj.org

कन्याओं ने भी भरपूर आनन्द उठाया। 24 अगस्त संस्कृति सेवा सप्ताह के अन्तर्गत भारत विकास परिषद् की ओर से कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें कन्याओं को आवश्यक वस्तुएँ प्रदान की गईं।

9 सितम्बर से 15 सितम्बर तक– क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र के प्रमुख **डॉ. रत्नेश वर्मा** जी की ओर से **'मल्हार के रंग'** विषयक 9 दिन की संगीत कार्यशाला 7 सितम्बर से 15 सितम्बर तक आयोजित की गई। जिसमें वाराणसी के वरिष्ठ विशिष्ट कलाकार डा. राजेश्वर आचार्य, प्रो. ऋत्विक् सान्याल, प्रो. शारदा वेलंकर, पं. देवाशीष डे तथा श्रीमती सुचरिता गुप्ता के कुशल एवं सूक्ष्म निर्देशन में ध्रुपद-धमार, ख्याल, लोक संगीत आदि में राग मल्हार के विविध प्रकारों का विद्यालयीय कन्याओं के साथ-साथ बी.एच.यू. के लगभग 100 छात्र-छात्राओं ने प्रशिक्षण प्रमाण पत्र प्राप्त किया तथा समापन के अवसर पर अपनी रोचक प्रस्तुतियाँ भी दीं।

6 अक्टूबर लायन्स क्लब रायल एवं गोल्ड की ओर से वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया तथा छात्रावास हेतु पंखे प्रदान किये गये। आर्य समाज अशोक विहार दिल्ली की बहिनों की ओर से विभिन्न आवश्यक वस्तुएँ प्रदान की गईं।

इसी सन्दर्भ में पू. माता **श्रीमती ऊर्मिला देवी** (वाराणसी) जो विद्यालय से काफी वर्षों से जुड़ी हुई हैं बहुत स्नेह रखती हैं प्रतिवर्ष कन्याओं को विशेष भोजन के साथ-साथ विद्यालय की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए विभिन्न वस्तुएँ प्रदान करती ही रहती हैं। आपने अपने पू. पतिदेव श्री भूदेव प्रसाद जी की स्मृति में इसी जुलाई से संगीत विद्यालय का शुभारम्भ करवाया है जिसमें कण्ठ संगीत एवं वाद्य शिक्षिकाओं का मानदेय 9 हजार रुपये प्रतिमास उनके ट्रस्ट की ओर से ही प्रदान किया जाता है। सहयोग करने का यह अनुकरणीय प्रकार है। आप भी इस प्रकार का सहयोग कर सकते हैं साइंस एवं कम्प्यूटर लैब बन कर तैयार है उसमें प्रशिक्षण दिलवाकर या अन्य शैक्षणिक सहयोग प्रदान कर पुण्य के भागी बन सकते हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय महिला छात्रावास–

विद्यालयीय शिक्षण प्रशिक्षण आवागमन आदि विविध क्रिया-कलापों की व्यस्तता के साथ-साथ छात्रावास का निर्माण भी निरन्तर प्रगति की ओर है। परोपकार पारायण धार्मिक प्रवृत्ति के दानी महानुभावों का सहयोग ही इसमें गति प्रदान कर रहा है। सम्प्रति इसका प्रमुख रूप श्रेय मैं देना चाहूँगी वाराणसी नगर के प्रसिद्ध उद्योगपति, सुचिन्तक साहित्यकार **डॉ. दीनानाथ झुनझुनवाला** को जिन्होंने स्वयं तो इस निर्माण में उत्कृष्ट सहयोग दिया ही, और आपकी ही सत्प्रेरणा से मुम्बई के सम्मान्य **श्री एस.बी. सोमानी** से भी प्रयास करके उत्कृष्ट सहयोग प्राप्त हुआ है। सम्मान्य **श्री अशोक कुमार अग्रवाल** जी एवं **श्री शिवकुमार अग्रवाल** मेरठ तथा **आर्य समाज वाशी मुम्बई** का भी उत्कृष्ट सहयोग प्राप्त हुआ है। परिणामस्वरूप छात्रावास का निर्माण कार्य निर्बाध गति से चल रहा है प्रभु की कृपा तथा आप सबका सहयोग रहा तो शीघ्र ही पूर्ण हो जायेगा। जनवरी मास में इसका उद्घाटन करने की योजना है।

परमपिता परमेश्वर आप सभी को स्वस्थ दीर्घ एवं यशस्वी जीवन प्रदान करे। आप सबका आशीर्वाद एवं सहयोग ही हमारा सम्बल है।

शिवा नः सन्तु आशिषः।

●

www.thearyasamaj.org

विजयादशमी (एक चिन्तन)

– डा. प्रीति विमर्शिनी

भारतीय संस्कृति में एक वर्ष के अन्तर्गत चार मुख्य पर्व आते हैं प्रथम श्रावणी उपाकर्म रक्षाबन्धन, द्वितीय विजयादशमी-दशहरा, तृतीय दीपावली तथा चतुर्थ होली। जिसमें से रक्षाबन्धन व्यतीत हो गया होली में अभी समय है, दीपावली सान्निकट है तथा विजयादशमी का प्रारम्भ है नवरात्र चल रहे हैं। आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि विजयादशमी है। यह संसार एक रणक्षेत्र है इस रणक्षेत्र में प्रत्येक मनुष्य विजय प्राप्त करना चाहता है। और करता भी है किन्तु अपने मन पर, आत्मा पर इन्द्रियों पर विजय प्राप्त न करके केवल मनुष्यों एवं सांसारिक वस्तुओं पर विजय प्राप्त करने का प्रयास ही व्यर्थ है। और इन पर विजय प्राप्त कर लेना मानो सम्पूर्ण जगत् पर विजय प्राप्त कर लेना है, अपने वश में कर लेना है **जितं जगत् केन? मनो हि येन**। जग को किसने जीता जिसने मन को जीता। और इन मन इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर वीर बनने का उपाय है उपासना किसकी उस परमेश्वर की परमेश्वर की शक्तियों की। उपासना का तात्पर्य है, उप = समीप में आसना स्थिति अर्थात् अपने मन को किसी एक रूप में स्थिर कर देना या स्थिर करने का प्रयास करना। मन का यह गुण है कि वह जहाँ स्थिर होता है उसके गुण एवं धर्मों को ग्रहण करने लगता है। इतना ही नहीं मन स्थिर हो जाने पर मन की अनुयायी इन्द्रियाँ तथा शरीर भी तदाकार होने लगता है। अतः विचारपूर्वक ही उपासक को उपास्य का निश्चय करना चाहिये जिससे उपासक की उपासना सही दिशा की ओर प्रवृत्त हो। और वह उपास्य है अग्निरूप परमेश्वर जैसा कि वेद में कहा–

यदि वीरो अनुष्यात् अग्नि मिन्धीत मर्त्यः।
आजुह्वत हव्यमानुषक् शर्म भक्षीत दैव्यम्॥

(साम. 82)

यदि मनुष्य वीर बनना चाहता है, कामादि शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर मन तथा इन्द्रियों को अपने वश में करना चाहता है तो– अग्निम् = अग्नि रूप प्रभु वह प्रभु जो अग्नि के समान सब दुर्गुणों को कामादि शत्रुओं को भस्मसात् कर देता है, उसकी इन्धीत = उपासना करे।

और यह उपासना स्तुति एवं प्रार्थना के साथ की जाती है क्योंकि स्तुति से उपास्य ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव का वर्णन मनन एवं चिन्तन करते हुए तदनुरूप आपने गुण कर्म स्वभाव को बनाने का प्रयास करके प्रार्थना से निरभिमान्ता उत्साह एवं उपास्य की सहायता प्राप्त करके पश्चात् उपासना के द्वारा उपास्य परब्रह्म से मेल और उसका साक्षात्कार होता है। इस प्रकार उपासना करते समय उपास्य की शक्तियों का चिन्तन करते हुए मन को अन्य सांसारिक विषयों से हटाकर अपने अन्दर विद्यमान काम, क्रोध आदि शत्रुओं के भस्मसात् कर परमात्मा के साथ तदाकार करना है।

www.thearyasamaj.org

परमेश्वर को सर्वशक्तिमान् कहा गया है उसके अनंतं गुण कर्म स्वभाव ही उसकी शक्तियाँ है पुनरपि, सर्जन, धारण, संहारण ये तीन शक्तियाँ प्रमुख हैं। परमेश्वर की इन शक्तियों को ही अनेक रूपों में कल्पित कर नौ दिन तक शक्ति की उपासना कर स्वयं को शक्तिमान् करते हुए बनाते हुए मन एवं इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर आत्मा को विजयी एवं वीर बनाते हैं। ज्ञानेन्द्रिय एवं कर्मेन्द्रियों को मिलाकर नौ द्वार तथा दसवाँ मन इन के अधीन होकर ही तो हम आन्तरिक शत्रुओं के विकारों के अधीन होते हैं अतः दसवें दिन ही हमारी आन्तरिक एवं बाह्य शुद्धि होती है। सूर्यमान से संवत्सर में 360 दिन होते है। अखण्ड संख्याओं में सबसे बड़ी संख्या नौ है, नौ से विभाजित करने पर सम्पूर्ण वर्ष में 40 नवरात्र होते हैं चालीस नवरात्रों में चार नवरात्र जो कि प्रत्येक ऋतुओं के प्रारम्भ में चैत्र, आषाढ़, आश्विन एवं पौष मास की शुक्ल प्रतिपदा से प्रारम्भ होते हैं। इनमें भी चैत्र और आश्विन के नवरात्र विशेष रूप से प्रधान हैं। ये दोनों ही मास ग्रीष्म और शीत दो प्रधान ऋतुओं के प्रारम्भ होने की सूचना देने वाले हैं ये दोनों ही नवरात्र मौसम के सन्धिकाल हैं जिससे पाचन प्रक्रिया भी प्रभावित होती है उसे व्यवस्थित करने के लिये ही व्रत उपवासादि का विधान कर दिया गया है जिसे आवश्यकतानुसार ही करना चाहिये अनिवार्यतया नहीं।

परमेश्वर की ये शक्तियाँ, गुण कर्म स्वभाव जगत् के पदार्थों में विभिन्न रूप से प्रतिभासित होती हैं उससे ही परमेश्वर जगत् को चलायमान रखता है तथा सबका धारण, पालन एवं पोषण करता है। जैसे सूर्य चन्द्र नक्षत्र, तारे, विद्युत्, अग्नि आदि में उस परमेश्वर का ही प्रकाश है–

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्र तारकं,
नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः।
तमेव भान्तम् अनुभाति सर्वम्,
तस्य भासा सर्वमिदं विभाति॥

उसी प्रकार नारी के अन्दर भी परमेश्वर ने अपनी शक्तियों का आधान किया है इसीलिये नारी को शक्ति स्वरूपा कहा गया है और परमेश्वर की शक्ति की उपासना के लिये नारी रूप की कल्पना की गयी है। पर दुर्भाग्य है इस देश का कि हम नारी की प्रतिमा बनाकर उसे ही देवी तथा भगवान् मानकर उसकी पूजा, अर्चना आराधना तो कर लेते हैं, अष्टमी एवं नवमी के दिन कन्या पूजन भी कर लेते हैं और इतने में ही अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं। पर घर में विद्यमान देवी की पूजा या सत्कार का कोई स्थान नहीं है, कन्याओं में नारियों में उन दैवी शक्तियों को आधान करने या कराने का कोई दायित्व नहीं है, जीती जागती नारी में, कन्या में देवत्व की, मातृत्व की, पूजा की, श्रद्धा की कोई भावना नहीं है। आज नारियाँ भी अपनी शक्तियों एवं दायित्वों को विस्मृत कर अंधश्रद्धा, अंधभक्ति, अंधविश्वास तथा अंधी दौड़ में अपना अस्तित्व ही समाप्त करने पर तुली हैं, परिणामस्वरूप अनैतिकता, अराजकता, दुर्बलता, अशिक्षा सब चरम सीमा पर है, जिसे नारी ही अपने सद्विचार से सत्प्रयास से दूर कर सकती है, क्योंकि राष्ट्र निर्माण की आधारशिला नारी ही है। अतः वर्त्तमान समय में नारियों के सर्वाङ्गीण विकास पर ध्यान देना आवश्यक है। आइये विजयादशमी के इस पावन

(शेष पृष्ठ 21 पर)

www.thearyasamaj.org

भाषा के उद्भव एवं विकास में महर्षि पाणिनि का योगदान

आचार्या नन्दिता शास्त्री

''भाषा भाषणात्'' भाषा वही है जो बोली जाती है बोलने के लिए शब्द होने चाहियें, प्रश्न है उस भाषा के शब्द का निर्माण किसने किया? पातञ्जल महाभाष्य में एक प्रसङ्ग आता है वहाँ शब्द नित्य है या कार्य (अनित्य) इस पर चर्चा चली है। पतञ्जलि मुनि वहाँ शब्दों को नित्य सिद्ध करने के लिये एक युक्ति देते हैं कि संसार में जो भी पदार्थ अनित्य होते हैं उनको बनाया जाता है इसीलिये उन्हें कार्य (करने योग्य) कहा जाता है। जैसे कि लोक में जिस व्यक्ति को घड़ा चाहिये वह कुम्हार के पास जाकर कहता है कि मुझे घड़ा चाहिये आप मेरे लिये एक घड़ा बना दें लेकिन उसी प्रकार संसार का कोई भी शब्द प्रयोक्ता आज तक किसी वैयाकरण के पास नहीं गया यह कहने के लिये कि हे व्याकरणाचार्य! आप शब्द बना दें मैं प्रयोग करूँगा प्रत्युत जब जिस किसी को जो अर्थ कहना हुआ वह उसी समय परम्परा से ज्ञात श्रुत शब्दों का प्रयोग बड़ी सहजता से कर लेता है, उसे बोलने के लिये शब्दों का भाषा का निर्माण नहीं करना पड़ता । प्रश्न होता है आखिर वह भाषा, वे शब्द कहाँ से आये? इनका उद्भव कैसे हुआ। उत्तर में यह कहना पड़ता है वह भाषा वे शब्द संस्कृत के हैं जो किसी मनुष्य के द्वारा निर्मित नहीं अपितु स्वयं परमात्मा के द्वारा प्रदत्त हैं।

अनादिनिधना नित्या वागुत्सृष्टा स्वयंभुवा

सृष्टि के आदि में स्वयंभू परमेश्वर के द्वारा चार वेदों के रूप में प्राप्त इस वाणी का कोई आदि और अन्त नहीं है इसीलिये यह अनादिनिधना वाक् कही जाती है। जैसे परमेश्वर स्वयं उत्पन्न, पूर्ण, सर्वज्ञ और नित्य है उसी प्रकार उसके द्वारा अग्नि, वायु, आदित्य, अङ्गिरा नामक चार ऋषियों के अन्तःकरण में क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद के रूप में प्रेरित यह ज्ञान भी पूर्ण और नित्य है। सृष्टि के आदि से लेकर राजा भोज के काल तक यह भाषा जनसामान्य के दैनिक व्यवहार की भाषा थी। इसका प्रमाण भोज प्रबन्ध नामक ग्रन्थ है जिसमें लकड़हारे, जुलाहे तक संस्कृत में बोलते, संस्कृत में कवितायें करते, संस्कृत व्याकरण के ज्ञाता होते थे यह सोदाहरण उल्लिखित है। आज भी कई परिवार गाँव ऐसे हैं जहाँ सब लोग दुकानदार तक संस्कृत में ही व्यवहार करते हैं संस्कृत उनकी मातृ भाषा है। वे संस्कृत में ही हँसते, खेलते, मनोरंजन करते, गाते, गुनगुनाते माता से मनुहार करते, याचना करते नजर आते हैं। यह भाषा कितनी समृद्ध है इसका अनुमान लगाना कठिन है। पातञ्जल महाभाष्य में ही–

एवं हि श्रूयते- बृहस्पतिरिन्द्राय दिव्यं वर्षसहस्त्रं प्रतिपदोक्तानां शब्दानां शब्दपारायणं प्रोवाच नान्तं जगाम॥

ऐसा सुना जाता है कि बृहस्पति ने इन्द्र को दिव्य हजार वर्ष पर्यन्त एक-एक शब्दों का प्रवचन किया लेकिन वह उसके अन्त को नहीं प्राप्त कर सका। आगे वे लिखते हैं- बृहस्पति जैसा प्रवक्ता इन्द्र जैसा अध्येता और अध्ययन काल भी कुछ वर्ष नहीं

www.thearyasamaj.org

अपितु दिव्य सहस्र वर्ष जिसमें पीढ़ियाँ समाप्त हो जायें लेकिन फिर भी वे इस संस्कृत भाषा के शब्दों का अन्त नहीं प्राप्त कर सके तो हमारी क्या बिसात है? एक अन्य प्रसंग में पूर्वपक्षी द्वारा यह कहने पर कि संस्कृत में शब्द तो बहुत हैं पर उनका प्रयोग नहीं होता है इसके उत्तर में भी वे संस्कृत वाङ्मय की बहुलता और व्यापकता को बताते हुए लिखते हैं–

उपलब्धौ यत्नः क्रियताम्। महान् शब्दस्य प्रयोगविषयः। सप्तद्वीपा वसुमती त्रयो लोकाः चत्वारो वेदाः साङ्गा सरहस्याः बहुधा भिन्नाः .....।

उपलब्धि के लिये प्रयत्न करिये– संस्कृत शब्दों के प्रयोग का स्थल बहुत बड़ा है, महान् है सारे भूमण्डल में यह भाषा बोली जाती है। सर्वप्रथम यह धरती ही सात द्वीपों वाली है इसके बाद तीन लोक हैं तीनों लोकों में इसका प्रयोग होता था। इसी के साथ इसके वाङ्मय को देखें, वे लिखते हैं– चार वेद हैं छः अंग हैं (शिक्षा, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष, कल्प) एक एक वेद की कई कई शाखायें हैं यजुर्वेद की 100 शाखायें, सामवेद की हजार, ऋग्वेद की 21 अथर्ववेद की 9 चारो वेदों के अलग अलग ब्राह्मण हैं, उपनिषद् हैं, उन पर तर्क वितर्क करने वाले षड् दर्शन शास्त्र हैं, रामायण, महाभारत जैसे बृहत्तम इतिहास ग्रन्थ हैं, पुराण हैं चारों वेदों के चार उपवेद पृथक् हैं आयुर्वेद धनुर्वेद, गान्धर्ववेद, अर्थवेद इसके अतिरिक्त अर्थशास्त्र, गणितशास्त्र, ज्योतिष, कल्प आदि 14 विद्यायें हैं इतने बड़े शब्द प्रयोग के विषय की आलोचना गवेषणा किये बिना शब्द हैं किन्तु अप्रयुक्त हैं यह कहना तुम्हारा साहसमात्र है। आगे वे लिखते हैं बहुत से ऐसे शब्द हैं जो केवल उत्तर पश्चिम या दक्षिण में ही बोले जाते हैं। एक एक शब्द के 100-100 पर्यायवाची शब्द हैं जो केवल संस्कृत भाषा में ही मिलते हैं। जिसे हम वैदिक शब्दकोष निघण्टु तथा लौकिक शब्दकोष अमर कोष आदि में देख सकते हैं, अकेले विष्णु के एक हजार नाम हैं जो कि विष्णुसहस्रनाम में देखे जा सकते हैं। इतनी व्यापक और समृद्ध भाषा को व्याकरण में बाँधना आसान कार्य नहीं है। जिसे महर्षि पाणिनि ने 3 हजार 96 सूत्रों में कर दिखाया। महर्षि पाणिनि के पञ्चोपदेश ग्रन्थ– 1. अष्टाध्यायी, 2. धातुपाठ, 3. उणादिकोष, 4. लिंगानुशासन, 5. गणपाठ इस दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण हैं उनसे भी बचे कार्य को वार्त्तिककार कात्यायन और पतञ्जलि मुनि ने अष्टाध्यायी के सूत्रों पर वार्त्तिक और महाभाष्य लिख कर पूर्ण किया। जिन्हें प्रति वर्ष आज भी काशी में नागपञ्चमी के दिन काशीवासी नागकुआँ स्थान पर एकत्र होकर स्मरण करते हैं, इसका ऐतिहासिक महत्व है।

आज जब कि संस्कृत को व्यवहार से एकदम पृथक् कर दिया गया है यदि महर्षि पाणिनि न होते तो इतना विपुल विशाल वाङ्मय होते हुए भी हमारा सम्पूर्ण ज्ञान विज्ञान शिल्प कला कौशल इतिहास सब कुछ समाप्त हो गया होता। इसमें सन्देह नहीं कि आज यदि हम संस्कृत जानते हैं संस्कृत के ग्रन्थ वेदादि शास्त्रों को समझते हैं तो पाणिनि व्याकरण के अध्ययन से ही। क्योंकि विशाल संस्कृत वाङ्मय के होने मात्र से हमारा कुछ भी भला नहीं हो सकता था यदि हम उनमें निहित ज्ञान को समझ नहीं पाते।

पाणिनि परम्परा– मध्य काल में बहुत से विदेशी व एतद्देशीय विद्वानों के द्वारा भी जब हमारे वेदादि शास्त्रों की गलत व्याख्यायें गलत भाष्य प्रस्तुत

www.thearyasamaj.org

कर वेदों में वाममार्ग, पशु हिंसा, सुरापान, अश्लील बातों का प्रतिपादन है ऐसा सिद्ध किया गया जिससे भारतीयों को नीचा देखना पड़ा। उस समय भी पाणिनि के व्याकरण ने ही हमारी रक्षा की और हम सही भाष्य, सही व्याख्या सबके सामने प्रस्तुत कर सिर ऊँचा कर सके। मध्यकाल में जब कुछ अल्पज्ञ, अनार्ष, विद्वत्ता का दम्भ करने वाले अहम्मन्य, अज्ञानी, अल्पज्ञानी लोगों ने नव्य व्याकरण की रचना कर संस्कृत को रट्टू भाषा बना दिया था उस समय भी **प्रज्ञाचक्षु दण्डी गुरु विरजानन्द** और उनके महान् शिष्य **स्वामी दयानन्द सरस्वती** ने पाणिनि अष्टाध्यायी के माध्यम से ही इसके उद्धार का कार्य किया। उसी परम्परा में पूज्य गुरुवर्य **श्री पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जी** जिन्होंने ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों को पढ़कर यह प्रण कर लिया था कि पाणिनीय अष्टाध्यायी में आठ अध्याय हैं और प्रत्येक अध्याय में चार पाद हैं कुल मिलाकर 32 पाद हुए। इसके लिये मुझे 32 जन्म भी लेना पड़े तो भी मैं पाणिनीय आर्ष क्रम से ही अष्टाध्यायी का अध्ययन करूँगा अनार्ष सिद्धान्त कौमुदी आदि प्रक्रिया ग्रन्थों से नहीं। अनेक तप, त्याग व संघर्षों के बाद उनका यह संकल्प पूर्ण हुआ उन्होंने अष्टाध्यायी क्रम से ही आजीवन ब्रह्मचारी रह कर यह अध्ययन पूर्ण किया और अपने जीवन में अनेक शिष्य प्रशिष्य तैयार कर दिये जो पाणिनि क्रम से बड़ी सरलता से सम्पूर्ण लौकिक वैदिक व्याकरण का अध्ययन-अध्यापन करते, कराते हैं। उसी कड़ी में सतना मध्य प्रदेश निवासिनी आपकी ही शिष्या द्वय आचार्या **डा. प्रज्ञा देवी-मेधा देवी जी** ने सन् 1971 में **पाणिनि कन्या महाविद्यालय** की स्थापना विशेष रूप से बालिकाओं एवं महिला जगत् को पाणिनीय अष्टाध्यायी महाभाष्य तथा वेद वेदांगादि विषयों में पारंगत करने हेतु की। आज इस महाविद्यालय से सम्पूर्ण व्याकरण महाभाष्यादि पढ़कर निकली विदुषी बहिनों की लम्बी सूची है।

सम्पूर्ण भारतवर्ष में यहाँ से पढ़ कर निकली हुई बहिनों ने अपनी एक पहचान बनाई है वे समाज में विदुषी वेद व्याख्यात्री पण्डिता के रूप में जानी जाती हैं जो कि महर्षि पाणिनि के अध्ययन से ही संभव हो सका है। आज उसी पाणिनि कन्या महाविद्यालय के प्रांगण में **महर्षि पाणिनि का स्मारक मन्दिर** जन-जन के सहयोग से लगभग 5 करोड़ की लागत से निर्मित खड़ा है। इस मन्दिर के चारों ओर अन्दर बाहर दीवारों पर संगमरमर के पत्थरों पर महर्षि पाणिनि के चार हजार सूत्र अंकित हैं जो कि इस महाविद्यालय की प्रत्येक कन्या को जुबानी (मौखिक) कण्ठस्थ हैं। इसी के साथ **महर्षि पाणिनि प्रज्ञा अनुसन्धान केन्द्र** भी यहीं पर महर्षि पाणिनि मन्दिर के नीचे भूतल पर कार्यरत है। न केवल स्वदेश अपितु सम्पूर्ण भूमण्डल की कन्यायें यहाँ आकर अध्ययन व शोध करें इसी दृष्टि से **अन्ताराष्ट्रिय महिला छात्रावास** का निर्माण भी इसी प्रांगण में चल रहा है। इस प्रकार भाषा के विकास व संस्कृत वैदिक वाङ्मय को जानने समझने के लिये महर्षि पाणिनि व उनके अध्येताओं का योगदान अप्रतिम है उनके सूत्रों पर उनके व्याकरणिक सिद्धान्तों पर अनेक शोध हो चुके हैं, हो रहे हैं और होते रहेंगे। आज आवश्यकता है ऐसे मौलिक कार्यों को संरक्षित तथा संवर्द्धित करने की। ●

14 सितम्बर, 2013 बहुभाषी संवाद समिति
हिन्दुस्थान समाचार द्वारा प्रकाशित

www.thearyasamaj.org

भूला क्यों इतिहास है!

– **अखिलानन्द पाण्डेय**, अखिल

भटक रहा पथ देश हमारा, भूला क्यों इतिहास है।
त्याग और बलिदान पंथ तज सुविधा का ही दास है।।

ऐहिक सुख को भी बन बैठा, भूल गई भारत माता।
भूल गया वन्दन पूजन, भूल गया अपना नाता।।
संस्कृति संस्कृत हुए उपेक्षित जग करता उपहास है।
भटक रहा पथ देश हमारा, भूला क्यों इतिहास है।।

वेद ऋचा के मधुर गान-गाने वालों का पता नहीं।
गीता रामायण अनजाने से, विस्मृतियाँ हैं सता रहीं।।
मानवता का संस्थापक ही खोया निज विश्वास है।
भटक रहा पथ देश हमारा, भूला क्यों इतिहास है।।

अपमानित माँ बहिनें होतीं दुःशासन है जाग रहा।
पतित मनुज आचरण हीन सा, शाश्वत पथ है त्याग रहा।।
भारत माँ आघात सह रही, जग करता उपहास है।
भटक रहा पथ देश हमारा, भूला क्यों इतिहास है।।

कहाँ छिपा अध्यात्म हमारा, तत्वज्ञान सिरमौर है।
संत सिद्ध ऋषि मुनि वाला थल, नहीं जगत में और है।।
रामचरित आचरित नहीं है, दूषण करता नाश है।
भटक रहा पथ देश हमारा, भूला क्यों इतिहास है।।

जागो और जगाओ सबको, कहती माँ आगे आओ।
भ्रष्टाचार-प्रदूषण मेटो, मानवता पथ अपनाओ।।
परहित चिन्तन में लग जाओ ज्ञान भक्ति धन पास है।
भटक रहा पथ देश हमारा, भूला क्यों इतिहास है।।

●

www.thearyasamaj.org

पाणिनि कन्या महाविद्यालय में अन्तर्राष्ट्रीय महिला छात्रावास

भारतीय संस्कृति महान् है, विश्ववारा है। स्वायम्भुव मनु से लेकर महाभारत काल पर्यन्त इसी देश के राजा चक्रवर्त्ती (सार्वभौम) सम्राट् होते थे। सभी देशों का राज्य शासन यहीं से संचालित होता था। इसीलिए महाभारत का युद्ध विश्वयुद्ध कहा जा सकता है जिसमें चीन से भगदत्त, अमेरिका से बभ्रुवाहन, यूरोप से विडालाक्ष, ईरान से शल्य आदि राजा अपनी विशाल सेना लेकर इस युद्ध में सम्मिलित हुए थे। यहाँ के नालन्दा तक्षशिला विश्वविद्यालय विश्व प्रसिद्ध थे। सभी देशों के विद्यार्थी यहाँ हर प्रकार (ज्ञान-विज्ञान, शिल्प कला कौशल) की शिक्षा प्राप्त करने आते थे। आज भी यहाँ की संस्कृति व संस्कृत का आकर्षण विश्व में कम नहीं हुआ है।

अपनी संस्कृति की रक्षा करते हुए गार्गी, घोषा, सुलभा, अपाला, भारती की परम्परा में कन्याओं को विदुषी बनाने का जो कार्य पाणिनि कन्या महाविद्यालय कर रहा है वह विश्व में अनूठा है बड़े-बड़े विश्वविद्यालयों से बड़ी-बड़ी डिग्री प्राप्त करके भी लोग यहाँ रह कर आर्ष शिक्षा प्राप्त करने के लिये समुत्सुक रहते हैं।

इस महाविद्यालय के आरम्भिक काल से न केवल सम्पूर्ण भारत अपितु हालैण्ड, मारिशस, नेपाल, दक्षिण अफ्रीका, अमेरिका आदि देशों से बहिनें यहाँ वैदिक शिक्षा प्राप्त करने के लिये आती रही हैं। इसी उद्देश्य से इस महाविद्यालय की महीयसी अजेय संस्थापिका **आचार्या डा. प्रज्ञा देवी जी** द्वारा संकल्पित- महर्षि पाणिनि स्मारक मन्दिरम् का निर्माण व महर्षि पाणिनि प्रज्ञा-अनुसन्धान केन्द्र का निर्माण पूर्ण होने के बाद उनकी तीसरी संकल्पना अन्तर्राष्ट्रीय महिला छात्रावास का निर्माण इस समय पूर्णता की ओर अग्रसर है। जनवरी 2014 तक हम इस निर्माण को पूर्ण करने के लिये संकल्प बद्ध हैं। शीघ्र ही इसका विधिवत् उद्घाटन हम आप सबके साथ सम्पन्न करेंगे।

उद्देश्य–

1. कन्याओं को संस्कार व शील सम्पन्न बनाना।
2. उन्हें पौरोहित्य वैदिक कर्मकाण्ड की शिक्षा देना।
3. उन्हें गुरुकुलीय परिवेश (आचार-विचार, रहन-सहन की शिक्षा) देना।
4. 16 संस्कारों का विधिवत् प्रशिक्षण देना।
5. संस्कृत का आरम्भिक ज्ञान कराना।
6. वेद मन्त्रोच्चारण सिखाना।
7. उपनिषद्, वेद, गीता, रामायण पढ़ाना।
8. जीवन का उद्देश्य बताना।
9. वर्णाश्रम मर्यादा की शिक्षा देना।
10. वैदिक प्रचारिका बनाना।

www.thearyasamaj.org

प्रवेश योग्यता–

नये सत्र (मार्च) से इस छात्रावास में प्रवेश की इच्छुक बहिनें, मातायें सम्पर्क कर सकती हैं। कम से कम 12वीं कक्षा उत्तीर्ण छात्राओं व बहिनों के लिये यह सुविधा उपलब्ध है। इसका मासिक शुल्क न्यूनातिन्यून 2500 रुपये होगा।

परिचय–

इस छात्रावास में 19 कमरे हैं। प्रत्येक कमरे के साथ प्रसाधन कक्ष (शौचालय-स्नानागार) संबद्ध है। 1 कमरे में चार कन्यायें सुविधापूर्वक रह सकती हैं। इसका भोजनालय पृथक् है। नीचे के तल में रसोई, भोजनशाला व मीटिंग हॉल अलग है। लिफ्ट की व्यवस्था भी रखी है।

सहयोग–

इस छात्रावास में अभी भी विभिन्न सहयोग की आवश्यकता है। ढाई लाख रुपये देकर आप एक कमरे के बाहर अपने नाम का पत्थर लगवा सकते हैं। आलमारी, पंखा, चौकी (तख्त), ए.सी., कूलर आदि विभिन्न मदों में आप अपना सहयोग दे सकते हैं। गो दुग्ध की व्यवस्था भी बढ़ानी होगी। लिफ्ट लगाने में भी लगभग 10 लाख का व्यय अनुमानित है। आप उदार सहृदय जनों के सहयोग से ही यह कार्य आज तक सम्भव हुआ है आगे भी होगा इसका मुझे पूर्ण विश्वास है। जो भी भाई-बन्धु इस निमित्त अपना योगदान देना चाहें वे **पाणिनि कन्या महाविद्यालय के H.D.F.C. बैंक के खाता नं. 02207620000015 में भेज सकते हैं**। यह संस्था आयकर मुक्त है इसे 80जी. सर्टिफिकेट प्राप्त है। आपका सहयोग हमारे लिये बहुमूल्य है।

पाणिनि कन्या महाविद्यालय की विशिष्ट गतिविधियाँ–

1. अन्तर्राष्ट्रीय महिला छात्रावास (12वीं कक्षा उत्तीर्ण छात्राओं के लिये मार्च 2014 से प्रवेश प्रारम्भ)।
2. वेद विद्यालय (महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान उज्जैन द्वारा प्रकल्पित 7वर्षीय पाठ्यक्रम)।
3. संगीत विद्यालय (गायन, वादन– सितार, तबला) सप्ताह में दो दिन। श्री लालचन्द, किरन देवी, श्री भूदेव प्रसाद उर्मिला देवी मुखारिया चे. ट्रस्ट के सहयोग से संचालित।
4. अध्यात्म योग साधना प्रशिक्षण प्रतिदिन।
5. बाल संस्कार केन्द्र (सप्ताह में दो दिन 5 से 6 बजे तक)।
6. महिला सत्संग (बृहस्पतिवार 3 से 5 बजे)।
7. कम्प्यूटर लैब।
8. साइंस लैब। (वैदिक विज्ञान के क्रियात्मक प्रशिक्षण व प्रदर्शन हेतु)
9. सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र।
10. धर्मार्थ चिकित्सालय (होम्योपैथी व एक्यूप्रेशर चिकित्सा- सप्ताह में दो दिन)।
11. प्राणिक हीलिंग उपचार (सप्ताह में 2 दिन)
12. जूडो-कराटे प्रशिक्षण (सप्ताह में दो दिन)

नोटः– ये सभी सुविधायें महिलाओं व बच्चों के लिये ही उपलब्ध हैं।

– आचार्या नन्दिता शास्त्री

www.thearyasamaj.org

मोक्षदायिनी निर्मल गंगा

– डा० (श्रीमती) आशालता सिंह

क्या आज गंगा का स्वरूप वही है जिसे कल तक हम लोग मोक्ष दायिनी कहा करते थे? क्या यह वही गंगा है जिसकी हर बूँद में अमृत भरा होता था? नहीं, बिल्कुल नहीं। आज गंगा जल का मूल स्वरूप ही पूरी तरह से बदला हुआ है। आज गंगा जल का प्रत्येक बूँद जहरीले विषाणुओं से भरा हुआ है।

हम सभी जानते हैं कि गंगा हमारी राष्ट्रीय नदी घोषित कर दी गयी है। हमारी सरकार इसके प्रति पूरी तरह से चिन्तित है और कई परियोजनाएँ भी इसकी स्वच्छता के लिए चला रही है। यही कारण है कि अब तक हमारी सरकार 36 हजार करोड़ रुपये से अधिक इस पर खर्च कर चुकी है। परन्तु इसे हम दुर्भाग्यपूर्ण विडम्बना ही कहेंगे कि हमारी गंगा स्वच्छ होने की जगह और भी मैली होती जा रही है। आइये देखें इन सबके पीछे क्या कारण है।

गंगा के किनारे 29 शहर, 70 कस्बा तथा हजारों गाँव बसे हैं जहाँ कुल 11 करोड़ 60 लाख लोग रहते हैं। एक आँकड़े के अनुसार प्रतिदिन 1.3 बिलियन (एक अरब, 30 करोड़) लीटर सीवेज का मैला पानी गंगा में प्रवाहित होता है। इससे गंगा के पानी में आर्गेनिक लोड (Organic Load) बढ़ रहा है जिसके कारण बी.ओ.डी. (Biological Oxygen Demand) की मात्रा भी अप्रत्याशित रूप से बढ़ रही है। फलस्वरूप डी.ओ. (Dissolved Oxygen) की मात्रा कम होती जा रही है और इस जल में रहने वाले जीव जन्तुओं पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। अतः गंगा की एक्वैटिक लाइफ (Aquatic Life) प्रभावित होती जा रही है।

इसके अतिरिक्त केवल उत्तर प्रदेश में ही 144 औद्योगिक इकाइयाँ हैं जिनमें मुख्यतया चमड़ा, फार्मास्यूटिकल, रंगाई, खाद, रिफाइनरी, कागज तथा कपड़ा व इलेक्ट्रानिक उद्योग शमिल हैं। आँकड़ों के अनुसार औद्योगिक इकाइयों से 260 मिलियन लीटर अपशिष्ट प्रतिदिन गंगा में जाता है। इन अपशिष्टों के कारण गंगा के जल में भारी धातु जैसे लेड (Pb), कैडमियम (Cd), क्रोमियम (Cr), निकिल (Ni), कापर (Cu) आदि की मात्रा बहुत बढ़ गई है। यह पानी को जहरीला बना रही है। इस प्रकार से कुल 80% म्यूनिसिपल तथा 15% औद्योगिक इकाइयों का अपशिष्ट गंगा में प्रवाहित होता है।

आँकड़े बताते हैं कि बनारस से प्रतिदिन 350 मिलियन लीटर सीवेज अपशिष्ट निकलता है। इसमें से केवल 100 मिलियन लीटर ही ट्रीटमेंट प्लांट द्वारा शोधित करने के उपरान्त गंगा में प्रवाहित किया

www.thearyasamaj.org

जाता है जबकि 250 मिलियन लीटर बिना शोधन के ही गंगा में प्रवेश करता है। ये सीवेज अपशिष्ट अस्सी घाट से राज घाट के बीच 38 नालों द्वारा गंगा में प्रवेश करते हैं। एक शोध के अनुसार बनारस में गंगा में अपशिष्टों की मात्रा बहुत अधिक होने के कारण फीकल कोलीफार्म (Fecal coliform) की संख्या 50,000 प्रति 100 मिली. तक पहुँच गई है, जो कि सामान्य मानक से 10,.000 गुना अधिक है। इनसे होने वाली बीमारियों में कालरा, टाइफाइड, पीलिया तथा डिसेन्टरी आदि मुख्य हैं। आँकड़ों के अनुसार प्रतिदिन 60 हज़ार से अधिक लोग यहाँ गंगा में स्नान करते हैं। **बनारस के घाट पर प्रतिवर्ष 40,000 से अधिक शव जलाए जाते हैं**, और हजारों अधजले शवों को गंगा में प्रवाहित किया जाता है। इन सभी से उत्पन्न होने वाले 16 हजार टन राख भी प्रतिवर्ष गंगा में प्रवाहित होता है। अतः हमें अपनी गंगा को स्वच्छ बनाने के लिए कई ठोस कदम उठाने पड़ेंगे।

1. गंगा में गिरने वाले सभी गंदे पानी को तुरन्त रोकना होगा। उसे ट्रीटमेंट प्लांट की सहायता से स्वच्छ करके सिंचाई आदि में उपयोग किया जा सकता है।

2. गंगा में साबुन लगाकर स्नान न करने तथा कपड़ा न धोने का कड़ाई से पालन किया जाना चाहिए।

3. पूजा के फूल तथा अन्य सम्बन्धित सामग्रियों का गंगा में प्रवाह भी वर्जित होना चाहिए।

4. हमारे व्यक्तिगत अनुसंधान से पता चला है कि इन अपशिष्टों के ट्रीटमेंट में कुछ बैक्टीरिया के प्रयोग से आर्गेनिक लोड की मात्रा कम की जा सकती है, रसायनों के जहरीलेपन को समाप्त किया जा सकता है तथा भारी धातुओं के दुष्प्रभावों को भी कम किया जा सकता है। अतः ऐसे एकीकृत कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करके उस पर गम्भीरता पूर्वक कार्य करने की आवश्यकता है।

तो आइये, आज हम सब मिलकर एक परम संकल्प लें और इस मोक्ष दायिनी गंगा की अविरल धारा को प्रदूषण मुक्त बनाएँ। ●

(पृष्ठ 13 का शेष भाग)

पर्व पर हम सभी भारतवासी यह संकल्प लें, कि अपने अन्दर विद्यमान काम, क्रोधादि दस भयंकर शत्रुओं से अपनी आसुरी प्रवृत्तियों पर विजय प्राप्त कर देवत्व को प्राप्त करें तथा नारियों की शक्ति पहचान कर उनसे लाभ प्राप्त करें, उनका सम्मान करें उनका शोषण या दोहन न करें तथा नारियाँ भी अपनी शक्ति को पहचान अपना सर्वाङ्गीण विकास करें तथा परिवार, समाज एवं राष्ट्र के प्रति अपने दायित्व को समझें। ●

www.thearyasamaj.org

ब्राह्मण! सावधान

गताङ्क से आगे–

– डा. सम्पूर्णानन्द

देवों की छीछालेदर

वेदार्थ समझने के लिए पुराणों की आवश्यकता है परन्तु पुराणों को समझने के लिए बड़े धैर्य की आवश्यकता है। पढ़ते-पढ़ते क्रोध आने लगता है। कैसी विभीषिका रची गयी है और तमाशा यह है कि यह सारा काण्ड ऐसे लोगों ने किया है जो अपनी रचना के द्वारा धर्म बुद्धि को दृढ़ करना चाहते थे।

पुराणों का आधार वेद है परन्तु पौराणिक देवसूची को श्रौत देवसूची से मिलाने से दोनों में बड़ा भेद देख पड़ता है। वैदिक देवों में से प्रायः सबका पद गिर गया है। जिस मर्यादा की रक्षा हिरण्यकशिपु, वृत्र, महिष के प्रबल आक्रमणों को मिलकर की गयी थी, वह इन पुराणकर्ताओं की लेखनी के आगे धूल में मिल गयी। अग्नि, यम, कुबेर, वरुण, बृहस्पति, अश्विद्वय, वायु, सूर्य छोटे-छोटे विभागों के अधिष्ठाता रह गये। अर्यमा, पूषा, नासत्य सुन्दर नाम थे, अब लुप्त हो गये। सरस्वती रह गयी पर वाक् उठ गयी। इन देवों के लिए क्या रोया जाय, सबसे बड़ी दुर्गति तो इन्द्र की की गयी।

उनका नैतिक चरित्र तो और भी गया बीता है। बात-बात में झूठ बोलते हैं, एक दूसरे की पत्नी के पीछे दौड़ते रहते हैं गुरुतल्पगमन जैसे घोर पाप से भी विरत नहीं होते, किसी की बढ़ती देख नहीं सकते, किसी को तप करते देखकर काँप उठते हैं, जो लोग धर्म या तप के मार्ग पर आरूढ़ होते हैं उनको पथभ्रष्ट करने के लिए नीच से नीच उपायों से काम लेते हैं, पदे पदे ऋषि-मुनियों से दुत्कारे जाते हैं। ऐसी कथाओं को पढ़कर या पुराण-वाचकों के मुँह से सुनकर किसी को देवों के प्रति श्रद्धा नहीं हो सकती। उनसे तो हम साधारण मनुष्य ही अच्छे हैं। जो लोग इतने पतित हैं, उनके सामने सिर क्या झुकाया जाये, उनके नाम के साथ स्वाहा जोड़कर क्यों उनको हव्य दिया जाय, क्यों उनसे कुछ माँगा जाये।

वैदिक वाङ्मय में देवगण

परन्तु वैदिक वाङ्मय में, जिसको पुराणों का आदि स्रोत बतलाया जाता है, देवों के प्रति ऐसी बातें नहीं मिलती। जैसा मैं पहले कह आया हूँ, वास्तविक अर्थात् उपास्य देव वह हैं जिन्होंने अपने प्रबल तप और पुण्य से देवपद प्राप्त किया है। इनके लिए देवत्व भोग नहीं वरन् कर्म की भूमि है। इनका स्थान स्वर्लोक माना जाता है। इनको आजानदेव कहते हैं। इन्द्र, अग्नि, विष्णु, रुद्र आदि आजानदेव हैं। यह अपने पदकाल में ब्रह्माण्ड का संचालन करते हैं, ऋत और सत्य के विश्वविधायक अटल नियमों के अनुसार जगत् को चलाते हैं, सुख समृद्धि का वितरण करते हैं,

www.thearyasamaj.org

लोगों को यथाशक्य धर्म मार्ग से च्युत होने से रोकते हैं, भूलते-भटकते मनुष्यों की गुरुजन की भाँति भर्त्सना भी करते हैं, बड़े भाई की भाँति विद्या और धर्म के कठिन पथ पर हाथ पकड़कर ले चलते हैं। देवों को देवयोनि में होने से ही निष्प्रयास एक प्रकार की समाधि प्राप्त रहती है परन्तु उस समाधिजन्य प्रज्ञा और विभूति का उपयोग यह लोग भवसमुद्र में पड़े हुए अल्पवीर्य, अल्पमेध प्राणियों के हितार्थ करते रहते हैं। इसमें उनका कोई स्वार्थ नहीं है, भूतदया ही कारण है। यह ठीक है कि मनुष्य को चाहिये कि हव्य और स्तुति से देवों का सन्तर्पण करें। पर यह इसलिए नहीं कि इसके बिना देवगण का कोई काम रुक जाता है प्रत्युत इसलिए कि कर्त्तव्य का पालन न करना अधर्म है और अधर्म का परिणाम दुःख है। जो श्रुति साक्षात् धर्म मूर्ति है उसमें आदि से अन्त तक जिन देवों की महिमा गायी गयी है उनको दुराचारी कहने से बढ़कर अधर्म और क्या होगा? जहाँ-जहाँ वैदिक यज्ञादि का अनुष्ठान आता है वहाँ पहिले सत्य का संकल्प करना होता है क्योंकि शतपथ के शब्दों में '**अमेध्यो वै पुरुषो यदनृतं वदति**' झूठ बोलने से पुरुष अपवित्र हो जाता है। अनुष्ठान के आरम्भ में अग्नि से प्रार्थना की जाती है कि मैं यज्ञ करना चाहता हूँ, इसके सम्पादन की मुझमें शक्ति दीजिये, इदमहमनृतात्सत्यमुपैमि यह मैं झूठ से सत्य की ओर आता हूँ, और यही देवगण जिनको उद्दिष्ट करके यज्ञ किये जाते हैं हमारे सामने मनुष्यों से भी गये-बीते अनृतात्माओं के रूप में रखे जाते हैं।

इन्द्रादि का तपस्वियों के प्रति ईर्ष्यालु होना भी विचित्र बात है। इसका अर्थ यह हुआ कि उनकी बुद्धि साधारण मनुष्यों की अपेक्षा बहुत ही कम है। जहाँ कोई अधिकारी कुछ वर्षों के लिए नियुक्त होता है वहाँ हम देखते हैं कि वह यह जानता है कि इस अवधि भर मैं प्रायः अटल हूँ। किसी को आगे बढ़ते देखकर यह भाव तो उनके मन में उठ जाता है कि यह मेरा उत्तराधिकारी होने के लिए यत्नशील है परन्तु अपने पद के छिन जाने की उसे कोई आशंका नहीं होती। भावी उत्तराधिकारी के प्रति उसके हृदय में मुदिता का भाव उदय हो या कुढन का, पर वह उससे लड़ाई नहीं मोल लेता। इन्द्र पद विशेष तप से प्राप्त होता है। इन्द्र की आयु सौ दिव्य वर्ष बतलायी गई है अर्थात् एक व्यक्ति सौ दिव्य वर्ष तक इस पद पर रहता है। फिर इन्द्र किसी से ईर्ष्या क्यों करेंगे। उतना तो वह जानते ही होंगे, जितना कि पुराणों की कृपा से हम जानते हैं। जब सौ वर्ष तक उनका स्थान अटल है और उसके पीछे उनको उस जगह से हटना ही है तब फिर वह किसी को तपोभ्रष्ट क्यों करना चाहेंगे? कर्म सिद्धान्त पर विश्वास रखने वाला कोई भी व्यक्ति यह समझ सकता है कि इन्द्र की आयु बीच में कट नहीं सकती। यदि ऐसा हो तो कृतहानि हो जायेगी। अर्थात् उनकी तपश्चर्या का फल अभुक्त रह जाएगा। परन्तु पुराणाचार्य हमको सिखलाते हैं कि देवगण न केवल दुराचारी, इन्द्रियलोलुप और झूठे हैं वरन् परले सिरे के मूर्ख भी हैं।

www.thearyasamaj.org

हमारा ज्योतिष और धर्मशास्त्र

गतांक से आगे –

– आचार्य हरिहर पाण्डेय

दैवेन त्वभियुक्तोहं तत् करोमीदृशं स्थितम्
समाश्वासनवागेषा न दैवं परमार्थतः 8/15
मूढैः प्रकल्पितं दैवं तत्परास्ते क्षयं गताः
प्राज्ञास्तु पौरुषार्थेन पदमुत्तमतां गताः 8/16

मैं दैव से प्रेरित होकर ऐसा कर रहा हूँ, यह आश्वासन मात्र है। सचमुच भाग्य कुछ नहीं है। मूर्खों ने इसकी कल्पना की और वे नष्ट हो गये, किन्तु बुद्धिमानों ने पुरुषार्थ से उत्तम पद पाया। शूर, पराक्रमी, मेधावी और विद्वान् भाग्य की प्रतीक्षा नहीं करते। ज्योतिषियों ने जिसकी दीर्घायु का निर्णय सुनाया है वह सिर कटने पर भी जीवित रहे तो भाग्य को श्रेष्ठ माना जा सकता है और ज्योतिषियों ने जिसके विद्वान् होने का निर्णय किया है वह यदि बिना पढ़ाये विद्वान् हो जाय तो भाग्य उत्तम है।

दैवं न किञ्चित् कुरुते न भुंक्ते न च विद्यते।
न दृश्यते नाद्रियते केवलं कल्पनेदृशी 9/3
अन्यस्त्वां चेतयति चेत्तं चेतयति कोऽपरः
क इमं चेतयेत्तस्मादनवस्था न वास्तवी9/29

दैव न कुछ करता है, न भोगता है, न उसका अस्तित्व है, न दिखाई देता है, न विवेकी पुरुषों द्वारा उसका आदर किया जाता है किन्तु भ्रान्त मूढ़ों ने बहुत दिनों से दैव (भाग्य) की कल्पना कर रखी है। यदि आपका प्रेरक कोई अन्य (दैव) है तो उसका प्रेरक कौन है और उसके प्रेरक का प्रेरक कौन है। अनेक प्रेरकों को मानने पर तो अनवस्था हो जायेगी।

अथ चेदशुभो भावस्त्वां योजयति संकटे
प्राक्तनस्तदसौ यत्नात् जेतव्यो भवता बलात् 9।27

यदि आपकी पूर्व-जन्म की वासनाएँ अशुभ हैं और वे संकट की ओर ले जा रही हैं तो प्रयत्न द्वारा बलपूर्वक उन पर विजय प्राप्त कीजिए।

योगी वसिष्ठ की कुछ बातें आपने सुनीं। हमारे दूसरे ज्योतिषी वसिष्ठ ने भयों का एक महासागर बनाया है। उनमें से कुछ आगे लिखे जायेंगे। उनके मत से स्त्री का एक भी रजोदर्शन ऐसा नहीं हो सकता जिसमें चार-छः भीषण दोष न हों। स्त्री संयोग का मुहूर्त तो वर्ष भर में कदाचित् ही मिलेगा। क्या ये दोनों वसिष्ठ एक हो सकते हैं?

भाग्य और गणेश दैवज्ञ

ज्योतिषशास्त्र के महान् आचार्य ग्रहलाघवकार श्री गणेश दैवज्ञ ने विवाह वृन्दावन की टीका में लिखा है कि भाग्य ही सब कुछ है तो मनुष्य कृषि आदि कर्मों में परिश्रम क्यों करता है? भाग्य में जितना लिखा है उतना ही मिलना है और उतना निश्चित रूप से मिलता है तो वेदों और स्मृतियों में लिखे विधानों, निषेधों, संयमों और नियमों का क्या महत्त्व रहा? पूर्व जन्म के कर्म इस जन्म में भाग्य बन जाते हैं और शुभ भाग्य की प्राप्ति इच्छा मात्र से नहीं बल्कि उद्यम से होती है। जैसे रखा हुआ बीज पृथ्वी, जल और उष्णता का

www.thearyasamaj.org

समुचित संयोग न मिलने पर कुछ दिनों में सूख जाता है वैसे ही उद्योग और सदाचार के अभाव में पिछले सत्कर्म व्यर्थ हो जाते हैं। भाग्य और कर्म रथ के दो चक्र हैं और पक्षी के दो पंख हैं। उनमें एक से काम नहीं चलता।

मनु स्मृति में लिखा है कि दीर्घायु, उत्तम स्वास्थ्य, धन और विद्या आदि की प्राप्ति भाग्य के नहीं, पुरुषार्थ और संयम के वश में है। ऋषियों ने दीर्घकाल तक संयम (ध्यान) द्वारा ही दीर्घायु, प्रज्ञा, यश और ब्रह्मवर्चस्व आदि पाया (4/94)। गुणी संतान और अक्षय धन सदाचार से ही प्राप्त होते हैं (4/156)। संयमी पुरुषों का पतन कभी होता ही नहीं (4/146)। भाग्य के विषय में महर्षि चरक की संमति आगे लिखी है। सदाचार और पुरुषार्थ की महत्ता एवं भाग्य की उपेक्षा के इस प्रकार के वर्णन से वेद, रामायण, महाभारत, पुराण और स्मृति ग्रन्थ भरे पड़े हैं। उन सब का सारांश यह है कि इस जन्म के सत्कर्मों द्वारा पूर्वजन्म के दुष्कर्मों के फलों को मिटाया जा सकता है।

मनोबल और ज्योतिष

वेदों के मत में मनुष्य का सबसे बड़ा मित्र मनोबल है, मनोबल की सबसे श्रेष्ठ स्थिति शिव (शुभ) संकल्प है, इन दोनों का सबसे बड़ा शत्रु भाग्यवाद है और भाग्यवाद का सबसे बड़ा पोषक एवं संरक्षक हमारा आधुनिक ज्योतिषशास्त्र है। इसमें छींक, छिपकली, गिरगिट, गोह, सूकर, साँप, संन्यासी, विधवा आदि के दर्शन से, भिन्न-भिन्न अङ्गों के स्फुरण से, स्वर से और तिथि, नक्षत्र, वार आदि से उत्पन्न कई सहस्र भीषण कुयोगों का भयावह वर्णन है। उनमें से कुछ आगे लिखे हैं। इन्होंने हमारे मनोबल की हत्या कर दी है। आज न तो किसी पहलवान को गुरुवार को दक्षिण जाने का, न किसी वेद-वेदान्ताचार्य को भद्रा-भरणी में विवाहादि करने का साहस है। मनुष्य का सबसे बड़ा बल मनोबल है। उसके अभाव में धन, अन्न, शरीर, विद्या, शास्त्र, सेना, देव आदि के सारे बल निरर्थक हो जाते हैं। हमारे पूर्वजों ने उसी बल से चीन, तिब्बत, जापान, लंका, श्यामदेश, ब्रह्मदेश, वियतनाम, जावा, सुमात्रा, इण्डोनेशिया आदि में सम्मान प्राप्त किया। महाराणा प्रताप सिंह ने मनोबल से ही नूतन अस्त्र-शस्त्रों से सम्पन्न एवं विशाल मुगल सेना में प्रवेश किया। उन्होंने जो किया वह शरीर बल और शस्त्रबल से कभी भी संभव नहीं था। श्री शिवाजी और रणजीत सिंह आदि वीरों ने थोड़ी-सी सेना द्वारा शत्रु की विशाल सेनाओं पर अनेक बार जो विजय प्राप्त की वे मनोबल के अभाव में असंभव थीं। शस्त्रास्त्रबल से विहीन लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी, श्री सुभाष, सावरकर, रासविहारी, चन्द्रशेखर और भगत सिंह आदि वीरों ने समस्त भूमण्डल में विख्यात और शस्त्रास्त्रबल से सुसम्पन्न अंग्रेजों को भारत से भगा दिया। यह मनोबल का ही प्रभाव था। सिकन्दर, गौरी, गजनवी, तैमूर, नादिर शाह, खिलजी, लोदी, तुगलक, मुगल, पुर्तगीज और अंग्रेज आदि वीर ऊँचे पर्वतों को लाँघकर, समुद्रों और रेगिस्तानों को पारकर बहुत दूर से थोड़ी सेना लेकर आये और भारत सरीखे सर्वसाधन सम्पन्न, वीर, विशाल देश पर सहस्रों वर्षों तक राज करते रहे। उन्होंने हमारे अगणित सिर काटे, मन्दिर तोड़े, प्रतिष्ठा लूटी और धन लूटा। यह मनोबल का ही प्रभाव था। विश्व के इतिहास में मनोबल द्वारा

www.thearyasamaj.org

शान्ति और विजय की प्राप्ति की तथा मनोबल के अभाव में पराजय और दुर्दशा की कई सौ कथाएँ हैं। भारतीय योगी मन की क्लिष्ट वृत्तियों का निरोध कर मनोबल से ही अनेक सिद्धियाँ प्राप्त करते थे। वे ज्योतिषियों से यह नहीं पूछते थे कि हमारे भाग्य में सिद्धियाँ लिखी हैं या नहीं। इसीलिए योगेश्वर कृष्ण ने गीता में कहा है कि मैं इन्द्रियों में मन हूँ। **इन्द्रियाणां मनश्चास्मि**। उन्होंने अर्जुन से कहा था कि नपुंसक मत बनो, मन की दुर्बलता का परित्याग कर खड़े हो जाओ, अपनी बुद्धि को निश्चयात्मिका बनाओ, मोहरूपी दलदल से बाहर आओ, ज्ञान को अज्ञान से आच्छादित मत होने दो, अपना उद्धार स्वयं करो और अपने को ईश्वर का अंश समझो। मत्स्यपुराण 243/27 और विष्णुधर्मोत्तर पुराण 2/163 में विस्तार से बताया गया है कि मन की तुष्टि, मन का उत्साह और मन की जय सबसे बड़ी विजय है तथा पाराशरसंहिता का कथन है कि सारे शुभ शकुन एवं मुहूर्तादि एक ओर हैं तथा मन की शुद्धि और उत्साह एक ओर है। मन ही मनुष्यों के बन्धन और मोक्ष का मुख्य कारण है, मन की हार हार है और मन की जीत जीत है।

मनसस्तुष्टिरेवात्र परमं जयलक्षणम्।
एकतः सर्वलिंगानि मन उत्साह एकतः॥

निमित्तशकुनादिभ्यः श्रेष्ठो हि मनसो जयः।
तस्माद् यियासतां नृणां फलसिद्धिर्मनोजयात्॥

मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः।
मन के हारे हार है मन के जीते जीत॥

राजनीति के महान् आचार्य श्री विष्णुशर्मा ने लिखा है कि मूढ के लिए प्रतिदिन शोक और भय के सहस्रों स्थान हैं। वह पृथ्वी के हर अन्न और पान में शंकालु रहता है। उसे कोई भी स्थान सुरक्षित नहीं प्रतीत होता और उसका जीवन दूभर हो जाता है। वह छोटा-सा कार्य प्रारम्भ करके भी व्याकुल हो जाता है पर शूरों और पण्डितों की स्थिति इसके ठीक विपरीत होती है। वे बड़े-बड़े कार्यों का आरम्भ करने पर भी निराकुल रहते हैं।

शंकाभिः सर्वमाक्रान्तमन्नं पानं च भूतले।
निवासः कुत्र कर्तव्यो जीवितव्यं कथं नु वा॥

आरभन्तेऽल्पमेवाज्ञाः कामं व्यग्रा भवन्ति च।
महारंभेऽपि सुधियस्तिष्ठन्ति च निराकुलाः॥

शोकस्थानसहस्राणि भयस्थानशतानि च।
दिवसे दिवसे मूढमाविशन्ति न पण्डितम्॥

विक्रमार्जितराज्यस्य स्वयमेव मृगेन्द्रता।
उत्साहसम्पन्नमदीर्घसूत्रं लक्ष्मीः स्वयं याति निवासहेतोः।

अल्प मनोबल वाले मनुष्यों के लिए छोटी-सी भी घटना कितनी भयावह हो जाती है तथा वे कैसे-कैसे भीषण सपने और शकुन देखने लगते हैं, इसकी भागवत की एक कथा पठनीय है। लिखा है कि कालिया नाग से लड़ने के लिए श्रीकृष्ण एक ऊँचे कदम्बवृक्ष पर चढ़ कर कालीदह में कूद पड़े। ब्रजवासी यद्यपि उनके पराक्रम से सुपरिचित थे और बलरामजी को हँसते देख रहे थे फिर भी भयभीत हो गये। उन्हें पृथ्वी, आकाश तथा शरीरों में तीनों प्रकार के भयंकर उत्पात दिखाई देने लगे और ऐसा प्रतीत होने लगा कि कोई भीषण घटना घटने वाली है। कृष्ण को मरा जानकर कुछ लोग आत्महत्या के लिए यमुना तट पर आ गये किन्तु सैकड़ों अपशकुनों का फल यह हुआ कि नाग भाग गया और यमुना का जल अमृत सदृश

www.thearyasamaj.org

हो गया (10/16)।

अथ व्रजे महोत्पातास्त्रिविधा अतिदारुणाः।
उत्पेतुर्भुवि दिव्यात्मन्यासन्नभयशंसिनः॥12॥
सकलत्रसुहृत्पुत्रो द्वीपमब्धेर्जगाम सः।
तदैव सामृतजला यमुना निर्विषाऽभवत्॥67॥

नीतिविदों का कथन है कि ऐसे भीरु और भविष्य-वक्ताओं के सम्पर्क में रहने से शूरों का मन भी कुछ दिनों में बलहीन हो जाता है अतः इनका त्याग ही श्रेयस्कर है।

हीयते हि मतिस्तात हीनैः सह समागमात्।

श्रीमद्भागवत (11/23) में एक योगी की शिक्षा है कि हमारे सुख-दुःख के कारण देव, ग्रह और विभिन्न काल आदि नहीं हैं बल्कि वह मन है जो संसार-चक्र को चला रहा है। मन ही तीन प्रकार की वृत्तियाँ उत्पन्न कर तीन प्रकार के कर्म करता है और शुभाशुभ गतियाँ दिलाता है। दान, धर्म, यम, नियम, अध्ययन, सत्कर्म और शौचादि व्रतों का पालन योग है किन्तु मनोनिग्रह ही इन सब का अन्तिम फल है और वही परम योग है। जिसका मन प्रशान्त और उत्साहपूर्ण है उसको दानादि के पालन की आवश्यकता नहीं है किन्तु जिसका मन संयम और उत्साह से हीन होने के कारण विनाशोन्मुख है उसे दान, यम, नियम आदि से कुछ नहीं मिलता। देवरूपी इन्द्रियाँ सदा मन के वश में रहती हैं किन्तु मन उनके वश में नहीं रहता। वह बलवान् देव है और जो उसे वश में कर लेता है वह मनुष्य देवों का देव है। अतः मन को जीतना और पवित्र, निर्भय एवं बली बनाना आवश्यक है।

नायं जनो मे सुखदुःखहेतुर्न देवतात्मग्रहकर्मकालाः।
मनः परं कारणमामनन्ति संसारचक्रं परिवर्तयेद् यत्॥
मनो गुणान् वै सृजते बलीयस्ततश्च कर्माणि विलक्षणानि।
शुक्लानि कृष्णान्यथ लोहितानि तेभ्यः सवर्णाः सृतयो भवन्ति॥
दानं स्वधर्मो नियमो यमश्च श्रुतानि कर्माणि च सद्व्रतानि।
सर्वे मनोनिग्रहलक्षणान्ताः परो हि योगो मनसः समाधिः॥
समाहितं यस्य मनः प्रशान्तं दानादिभिः किं वद तस्य कृत्यम्।
असंयतं यस्य मनो विनश्यद् दानादिभिश्चेदपरं किमेभिः॥
मनोवशेऽन्ये ह्यभवन् स्म देवा मनश्च नान्यस्य वशं समेति।
भीष्मो हि देवः सहसः सहीयान् युज्याद्वशे तं स हि देवदेवः॥

यजुर्वेद का कथन है कि मन देवबल से युत है, स्वयं देव है, ज्योतियों की ज्योति है, प्रज्ञान और अमृत स्वरूप है तथा धृति रूप है। उसमें सारा भूत, वर्तमान और भविष्य प्रतिष्ठित है, उसमें सबके मन ओत-प्रोत हैं, रथ की नाभि में अरों की भाँति उसमें सारे वेद (ज्ञान) स्थित हैं और मनोबल के बिना कोई कार्य नहीं किया जा सकता। जैसे अच्छा सारथी अश्वों को ठीक चलाता है वैसे ही संस्कृत मन मनुष्य को महान् बना देता है। मन एक महान् ज्योति है। वह सदा बलवान् वेगवान् और शिवसंकल्पवान् रहे।

यजाग्रतो दूरमुदैति दैवं दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकम्। यस्मिनृचः साम यजूंषि प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः। यस्मिंश्चित्तसर्वमोतं प्रजानां यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरमृतं प्रजासु। येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत् परिगृहीतममृतेन सर्वम्। यस्मान्न ऋते किंचन कर्म क्रियते। सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयते। हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥ ● **(क्रमशः)**

www.thearyasamaj.org

'राष्ट्रीय सहारा' 9 अक्टूबर, 2013

शास्त्र के साथ शस्त्र की भी शिक्षा

– प्रज्ञा त्रिपाठी/एसएनबी

वाराणसी। शक्ति की उपासना का पर्व शारदीय नवरात्र में प्रतिपदा से नवमी तक शक्ति के नौ रूपों की आराधना की जाती है। शक्ति आराधना की यह परम्परा सनातन काल से चली आ रही है। शक्ति की आराधना मात्र उनके हवन-पूजन से ही नहीं होती है, बल्कि सामान्य सी बालिकाओं में शक्ति का सृजन करना मां दुर्गा की सच्ची आराधना है। पाणिनी कन्या महाविद्यालय का गुरुकुल वैदिक शिक्षा प्राप्त कर रही छात्राओं के जीवन में भी इस शक्ति का सृजन कर रहा है। गुरुकुल में छात्राओं को वैदिक ज्ञान के साथ-साथ शस्त्र चलाना भी सिखा कर उनमें शक्ति की भावना जागृत की जा रही है।

महाविद्यालय की आचार्या नन्दिता शास्त्री बताती हैं कि मां दुर्गा के नौ रूपों में जहाँ मां सरस्वती ज्ञान का समुद्र हैं वहीं मां दुर्गा शक्ति का संग्रह हैं। महाविद्यालय की छात्राओं में इन दोनों रूपों का सृजन कर रही हैं ताकि जीन जीवन में हर परिस्थिति में वह मजबूत रहें।

वेदों संग मिलती है शस्त्र की शिक्षा–

गुरुकुल में वैदिक व संस्कृत ज्ञान की शिक्षा के साथ छात्राओं को अस्त्र-शस्त्र चलाना भी सिखाया जा रहा है। छात्राएं प्रतिदिन प्रातःकाल खेल के मैदान में तलवार, लाठी और भाला चलाने का अभ्यास करती है। इससे उनके मन में आत्मविश्वास बढ़ने के साथ-साथ मन का डर भी दूर होता है।

आपस में मिलकर करती हैं अभ्यास–

महाविद्यालय की आचार्या नन्दिता शास्त्री बताती हैं कि यह परम्परा महाविद्यालय के स्थापना के दिनों से चल रही है। महाविद्यालय की वरिष्ठ छात्राओं को कुशल विशेषज्ञों द्वारा अस्त्र-शस्त्र चलाने का प्रशिक्षण दिलाया जाता है। प्रशिक्षण प्राप्त कर वरिष्ठ छात्राएं ही कनिष्ठ छात्राओं को अस्त्र-शस्त्र चलाना सिखाती हैं।

प्रतिदिन होती हैं शस्त्र पूजा–

आचार्या नन्दिता शास्त्री कहती हैं कि शास्त्रों में लिखा है कि किसी वस्तु का इस्तेमाल ही उसकी पूजा है। इसलिए प्रतिदिन प्रातःकाल छात्राएं यज्ञ व हवन के बाद शस्त्र पूजा करती हैं। ऐसा इसलिए कि भारतीय संस्कृति में शस्त्रों का बड़ा महत्व है। इनके प्रयोग से हम स्वयं के साथ-साथ निर्बल की रक्षा कर सकती हैं।

समूह की भावना होती है जागृत–

महाविद्यालय की शास्त्री प्रथम वर्ष की छात्रा दीपाली का कहना है कि शस्त्र पूजा सिर्फ हमारा प्रतिदिन का कार्य मात्र नहीं बल्कि हमारे लिए एक भावना भी है। इससे वरिष्ठ व कनिष्ठ के बीच एक समूह कार्य करने की भावना पनपती है। शास्त्री की छात्रा साधना आर्या बताती है कि शस्त्र के अभ्यास से हम शारीरिक रूप से फिट रहते हैं। इससे हमारे द्वारा अर्जित अतिरिक्त ऊर्जा व्यय हो जाती है, जिससे हम शारीरिक रूप से स्वस्थ रहते हैं।

पूर्व मध्यमा की छात्रा किरण बताती है कि मैं तलवार चलाना सीख रही हूँ, ताकि आगे चलकर राष्ट्रीय खेलों में भाग लेकर महाविद्यालय का नाम रोशन करूँ। भाला चलाना सीख रही शान्ति व गार्गी का कहना है कि शस्त्र चलाना सीखने से हम स्वयं की रक्षा कर सकते हैं।

●

www.thearyasamaj.org

हर्ष समाचार

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि संस्कृत जगत् के प्रख्यात विद्वान् **डा. प्रशस्यमित्र शास्त्री** को राष्ट्रपति सम्मान से सम्मानित एवं पुरस्कृत करने की घोषणा हुई है। कौन नहीं जानता कि आप रस-सिद्ध कवि हैं। आपने अपनी सहस्त्रों रचनाओं से जो हास्य-रस की निर्झरिणी प्रवाहित की है, उससे सम्पूर्ण जगत् आप्यायित होता रहा है। सभा में परिपठित आपकी रचनाओं से सहृदय-हृदय पारिवद्य जनों की द्वात्रिंशत् दन्तपंक्ति का प्रकाशित होना आपकी विशेषता रही है। वास्तव में काव्य प्रकाश आदि में अति विरल 'त्रिचतुरा' कहे गए हास्य श्लोकों से संस्कृत हास्य-रस की परिपुष्टि नहीं होती। डा. शास्त्री की हास्य-रस की स्रोतस्विनी से संस्कृत जगत् में इदम्प्रथमतया हास्य-रस की प्रतिष्ठापना सम्भव हो पाई है।

डा. शास्त्री के हास्य-रस में प्राचीन सूक्तियों के साथ नवीन सामाजिक परिवेश को अत्यन्त स्वच्छ हास्यपूर्ण रीति से समाविष्ट करने की अद्भुत कला है। विचित्र ऊहा है। वे '**साहित्य संगीत कलाविहीनः साक्षात् पशुः पुच्छविषणहीनः।**' जैसे सुप्रसिद्ध वाक्यों का व्यतिरेक में प्रयोग करते हुए केवल उद्देश्यविधेय भाव बदल कर '**किं साहित्य संगीतकलासुयुक्तः साक्षात् पशुः पुच्छविषाणयुक्तः**' जैसे प्रश्नों से लोगों को विस्फारितनयन करना जानते हैं!!

डा. शास्त्री जी ने आर्ष परम्परा से संस्कृत अध्ययन किया है। आप शब्द शास्त्र एवं साहित्य शास्त्र को परम्परागत अध्ययन करते हुए केवल पंक्ति पण्डित नहीं बने, अपितु उन्होंने उसके अन्दर कुछ स्वतः स्फूर्त भी देखा है, जिसे प्रतिभाशील शीलित ही देख सकता है।

यह भी अत्यन्त आनन्द का विषय है कि आपने आर्ष परम्परा के आद्य संवाहक गुरुवर्य **पूज्य ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जी** की परम्परा को आगे बढ़ाया है। आप गुरुवर्य के सुयोग्य शिष्यों में रहे हैं। इस आर्ष परम्परा के विद्वानों में पूज्य गुरुवर्य के पश्चात् पं. युधिष्ठिर मीमांसक पूज्य **आचार्य विजयपाल जी** तथा **डा. सुद्युम्न आचार्य** जी को यह सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। आपने इस सम्मान को प्राप्त करके इस परम्परा को आगे बढ़ाया है, इसके लिये आपको पाणिनि परिवार की ओर से भूरिशः बधाई!!

●

www.thearyasamaj.org

सामान्य रोगों की सुगम चिकित्सा

– डा० अजीत मेहता

27. नजला-जुकाम

(1) सात काली मिर्च और सात बताशे पाव भर जल में पकावें। चौथाई रहने पर इसे गरमागरम पी लें और सिर तथा सारा बदन ढककर दस मिनट तक लेट जाएँ। सुबह खाली पेट और रात सोते समय दो दिन प्रयोग करें। दो दिन में ही नजले में बिल्कुल आराम हो जाएगा। इससे जुकाम, खाँसी, हल्की हरारत और शरीर के दर्द में आराम हो जाता है और पसीना आकर शरीर फूल सा हल्का हो जाता है। **ज्वर सहित जुकाम होने पर** सात तुलसी की पत्तियाँ भी काढ़ा बनाते समय उसमें डाल दें और यह काढ़ा दिन में दो बार दो दिन लें।

जुकाम में नाक बन्द होना– 10 ग्राम अजवायन को एक साफ कपड़े की पोटली में बाँधकर तवे पर गर्म कर लें। फिर इसे बार-बार सूँघने से जुकाम में आराम होता है, बन्द नाक खुल जाती है, गन्दा पानी निकल जाता है व सिर का भारीपन मिट जाता है।

28. खाँसी

(क) सूखी और तर खाँसी

भूनी हुई फिटकरी 10 ग्राम और देशी खाँड 100 ग्राम दोनों को बारीक पीसकर आपस में मिला लें और बराबर मात्रा में चौदह पुड़िया बना लें। सूखी खाँसी में 125 ग्राम गर्म दूध के साथ एक पुड़िया नित्य सोते समय लें। गीली खाँसी में 125 ग्राम गर्म पानी के साथ एक पुड़िया नित्य सोते समय लें।

फिटकरी का फूला (खील) बनाने की विधि

फिटकरी को पीसकर लोहे की कड़ाही में या तवे पर रखकर आग पर चढ़ा दें। फूलकर पानी हो जायेगी। जब सब फिटकरी पानी होकर नीचे की तरफ से खुश्क होने लगे तब उसी समय आंच तनिक कम करके किसी छुरी आदि से उलटा दें। अब फिर आंच तनिक तेज करें ताकि इस तरफ भी नीचे से खुश्क होने लगे। फिर इस खुश्क फूली फिटकरी का चूर्ण बनाकर रख लें। इस तरह फिटकरी को फुलाकर (खील करके) शुद्ध कर लिया जाता है। यह भुनी हुई फिटकरी का कई रोगों में सफलतापूर्वक बिना किसी हानि के व्यवहार होता है।

विशेष– इससे पुरानी से पुरानी खाँसी दो सप्ताह के अन्दर दूर हो जाती है। साधारण दमा भी दूर हो जाता है। गर्मियों की खाँसी के लिए विशेष लाभप्रद है। बिल्कुल हानिरहित सफल प्रयोग है।

विकल्प– (1) काली मिर्च और मिश्री बराबर वजन लेकर पीस लें। इसमें इतना देशी घी मिलायें कि गोली सी बन जाए। झरबेरी के बेर के बराबर गोलियाँ बना लें। एक-एक गोली दिन में चार बार चूसने से हर प्रकार की सूखी या तर खाँसी दूर होती है। पहली गोली चूसने से ही लाभ प्रतीत होगा।

www.thearyasamaj.org

खाँसी के अतिरिक्त ब्रांकाइटिस व गले की खराश और गला बैठने आदि रोगों में भी लाभदायक है। (2) काली मिर्च बहुत बारीक पिसी हुई में चार गुना गुड़ मिलाकर आधा-आधा ग्राम की गोलियाँ बना लें। दिन में 3-4 गोलियाँ चूसने से हर प्रकार की खाँसी दूर होती है। (3) यदि यह सम्भव न हो तो मुनक्का के बीज निकालकर इसमें काली मिर्च रखकर चबाएँ और मुख में रखकर सो जाएँ। पाँच सात दिन में खाँसी को आराम आ जायेगा।

सहायक उपचार– (1) प्रातः स्नान के समय शरीर पर पानी डालने से पूर्व सरसों के तेल की कुछ बूँदें हथेली पर रखकर नाक में डाल और सूंघने से खुश्की से होने वाला सिरदर्द ठीक होता है। इस क्रिया से जोर की आवाज के साथ उठने वाली सूखी खाँसी में आशातीत आराम मिलता है। (2) गुदा पर दिन में तीन-चार बार सरसों का तेल चुपड़ने से हर प्रकार की खाँसी दूर होती है, विशेषकर छोटे बच्चों की खाँसी में विशेष लाभप्रद है।

(ख) सूखी खाँसी–

सूखी खाँसी में पान (बिना लगे हुए) के सादे पत्ते में एक ग्राम अजवायन रखकर चबा-चबाकर रस निगलने से सूखी खाँसी मिटती है। केवल अजवायन एक-दो ग्राम खाकर ऊपर से गर्म पानी पीकर सो जाने से **सूखी खाँसी तथा दमा और श्वास** रोग में शीघ्र लाभ होता है। फेफड़ों के रोगों में अजवायन का प्रयोग करने से क़फ की उत्पत्ति कम होती है। अजवायन का सेवन क़फ नष्ट करके फेफड़े मजबूत करता है व **छाती के दर्द** में लाभ पहुँचाता है।

32. दमा

(क) साधारण दमा (श्वास)

सुहागा का फूला और मुलहठी को अलग-अलग खरल कर या कूटपीसकर, कपड़छान कर, मैदे की तरह बारीक चूर्ण बना लें। फिर इन दोनों औषधियों को बराबर वजन मिलाकर किसी शीशी में सुरक्षित रख लें। बस, श्वास, खाँसी, जुकाम की सफल दवा तैयार है।

सेवन-विधि– साधारण मात्रा आधा ग्राम से एक ग्राम तक दवा दिन में दो-तीन बार शहद के साथ चाटें या गर्म जल के साथ लें। बच्चों के लिए 1/8 ग्राम (एक रत्ती) की मात्रा या आयु के अनुसार कुछ अधिक दें। परहेज- दही, केला, चावल, ठण्डे पदार्थों का सेवन न करें।

विशेष– (1) फुफ्फुस, पेट, कण्ठ, नाक के कई प्रकार के साधारण और जटिल रोगों का चामत्कारिक रूप से नाश करने वाला यह योग नई दिल्ली के कविराज श्री देशराज जी की अद्भुत खोज है। इस एक ही योग से कई औषधालयों में खाँसी, जुकाम, श्वास, क़फ, स्वर-भेद, कुक्कुर खाँसी कई प्रकार के संक्रमण के रोगियों की कई वर्षों से सफल चिकित्सा की जा रही है जो कि सस्ता, आसानी से सर्वत्र उपलब्ध होने वाला, बनाने में सरल, हानिरहित और शीघ्र प्रभावकारी है। (2-क) ताजा जुकाम तो चुटकी भर दवा एक घूंट गर्म पानी में घोलकर दिन में तीन बार पिलाने से एक-दो दिन में ही समाप्त हो जाता है। इस योग का मुख्य घटक अकेला सुहागा (फूला हुआ) के बारीक चूर्ण का प्रयोग भी सर्दी-जुकाम में चमत्कारिक

www.thearyasamaj.org

फल देने वाला है। (ख) कठिन खाँसी, क्रुप, काली खाँसी, जीर्ण खाँसी और खाँसी की सभी अवस्थाओं में यह 'सुहागा और मुलहठी का चूर्ण' शहद के साथ लेना उत्तम औषधि सिद्ध हुई। (ग) कास की खास औषधि होने के साथ वह उन श्वास-रोगियों के लिए अत्यन्त लाभदायक है जिन्हें गाढ़ा-गाढ़ा बलगम बनने की शिकायत है और इतना खाँसना पड़ता है कि जब तक बलगम बाहर नहीं निकलता, चैन नहीं पड़ता। उन्हें यह दवा शहद या मिश्री की चासनी या केवल गला कत्था लगाये पान के साथ लेनी चाहिए। रात्रि सोते समय साधारण से दुगुनी मात्रा लेने से श्वास रोगी के रात्रि कष्ट में काफी कमी हो सकती है। आवश्यकतानुसार तीन-चार सप्ताह लेने से साधारण दमा दूर हो जाता है। यह बलगम को पाखाना के जरिए भी निकाल देती है। (घ) यदि बलगम कच्चा, थूक की तरह निकलता हो तो इस दवा की एक चुटकी मुँह में डालकर धीरे-धीरे चूसे। कफविकार ठीक होगा। जरूरत समझें तो बाद में एक घूंट कप सादा या गुनगुना पानी पिया जा सकता है। (3) बाल रोगों की विशेष औषधि– जुकाम, खाँसी जैसे बाल रोगों की यह विशिष्ट औषधि बच्चों के दमा में भी लाभप्रद है। दांत निकलते समय शिशु के समूड़ों पर हल्के-हल्के इस महीन चूर्ण को दिन में दो बार मलने से शिशु के दांत आसानी से और बिना किसी उपद्रव के निकल जाते हैं।

(ख) बच्चों का दमा

एक साल से अधिक आयु वाले बच्चों के दमा रोग में नित्य तुलसी की पाँच पत्तियाँ खूब बारीक पीसकर थोड़ी शहद के साथ प्रातःसायं आवश्यकतानुसार तीन-चार सप्ताह तक चटाएँ। एक साल से कम आयु वाले शिशु को तुलसी का रस दो बूँद (तुलसी की पत्तियाँ पीसकर स्वच्छ कपड़े से निचोड़कर निकाला गया तुलसी स्वरस) थोड़ी शहद में मिलाकर दिन में दो बार चटाएँ। बच्चों के दमा के साथ-साथ उनके श्वसन-संस्थान के अनेक रोग जड़ से दूर होंगे।

विशेष– बच्चों के दमा के अतिरिक्त पुराना साइनसाइटिस (तथा पुराना सिर दर्द, जीर्ण माइग्रेन, पुरानी एलर्जिक सर्दी, जीर्ण दमा आदि रोगों) में तुलसी की पत्तियों के प्रयोग से शीघ्र ही स्थायी लाभ होता है। प्रतिदिन प्रातः पानी से साफ की गई तुलसी की सात-आठ हरी पत्तियाँ बारीक पीसकर शहद के साथ आवश्यकतानुसार दो-तीन सप्ताह लेकर आजमाएँ। साहनासाइटिस का एक रोगी तो केवल 15 दिनों में ही इस विधि से तुलसी के सेवन से बिल्कुल ठीक हो गया, जिसे आपरेशन की सलाह दी गई थी।

(ग) दमा की स्वर चिकित्सा (बिना किसी दवा-सेवन के इलाज)

जब कभी दमा का दौरा उठे या श्वास फूलने लगे तब तत्काल स्वर परीक्षा करें अर्थात् हथेली पर जोर से साँस फेककर यह जानने का प्रयास करें कि नाक के कौन-से नथुने से साँस चल रही है। जिस नथुने से साँस चलती जान पड़े (या दूसरे नथुने के मुकाबले में कुछ तेजी से चलती जान पड़े) उस तरफ के नथुने को बन्द कर या चालू स्वर बदलकर दूसरे नथुने से साँस चलाने का प्रयत्न करें। स्वर बदल जाने से दस

www.thearyasamaj.org

पन्द्रह मिनट में ही दम का फूलना घट जाएगा।

अभ्यास से इच्छानुसार स्वर बदला जा सकता है। कुछ देर दायीं करवट (हाथ का तकिया बनाकर सिर के नीचे रखकर सोने) लेटने से बायाँ स्वर चलने लगता है इच्छानुसार स्वर बदलने का एक सहज उपाय यह है कि जिस नासिका छिद्र से स्वर चलाना है उसके दूसरी तरफ से नासिका छिद्र में रुई ठूंस दें। कुरसी पर बैठे है तो एक तरफ जोर देने या झुकने मात्र से, और यदि खड़े हैं तो एक पैर की एड़ी ऊँची करके दूसरे पैर पर जोर देने से, जिस तरफ जोर पड़ता है उसके दूसरी तरफ की नासिका छिद्र का स्वर लगता है। यदि कोई व्यक्ति बायाँ स्वर (अर्थात् बाएँ नासिका छिद्र से साँस चलना) लगातार आधा घण्टा चलाएँ तो उच्च रक्तचाप कम हो जाता है। इस प्रकार दम फूलते ही तुरन्त स्वर बदलने की कोई विधि अपना कर स्वर बदल देने से आश्चर्यजनक फल मिलता है।

स्थायी रूप से श्वास-रोग को दूर करने के लिए रोगों को प्रयत्नपूर्वक दिन-रात अधिक से अधिक दायाँ स्वर (अर्थात् दाहिने नथुने से साँस का निकलना या सूर्य स्वर) चलाने का अभ्यास करना चाहिए, जैसे– प्रातः उठते समय, भोजन करने के लिए बैठते समय, भोजन करने के बाद, रात्रि सोते समय। सूर्य स्वर कफशामक होने के साथ जठराग्निवर्धक भी है जिससे दमा शान्त होता है। अतः यदि भोजन भी स्वर शास्त्र के नियमानुसार किया जाए तो निश्चय दमे का रोग समूल नष्ट हो जाता है।

विशेष– (1) भोजन ग्रहण करते समय और भोजन करने के पश्चात् दायाँ स्वर (सूर्य स्वर) चलाएँ तो न केवल दमा रोग के उन्मूलन में ही सहायता मिलती है, बल्कि अजीर्ण, भूख न लगने और पाचन-शक्ति के कमजोर होने की शिकायतें भी दूर हो जाती हैं। यदि रोगी सदैव दाहिने नथुने से साँस चलते समय ही भोजन करें (और भोजन के साथ पानी पीना बन्द कर दें) और भोजन के बाद 15-20 मिनट बायीं करवट लेकर दाहिना स्वर चलाते रहें तो भोजन आसानी से पच जाता है और उपरोक्त शिकायतें दूर हो जाती है। यदि बदहजमी हो गई हो तो इस उपाय से (अर्थात् सूर्य स्वर चलाने से) वह धीरे-धीरे समाप्त हो जाती है, क्योंकि दाहिना स्वर पित्तवर्धक होने से इसे चलाने से पित्त या पाचक अग्नि को बल मिलता है और मन्दाग्नि दूर होकर पेट के अनेक रोग नष्ट हो जाते हैं।

(2) दायाँ स्वर चलने से शरीर में गर्मी बढ़ती है और बायाँ स्वर चलने पर शीतलता। अतः जुकाम, खाँसी, क़फ और ठण्ड से उत्पन्न रोगों में यदि दायाँ स्वर अधिक चलेगा तो रोगी जल्दी स्वस्थ हो जायेगा। इसके अतिरिक्त दायाँ स्वर चलाने से निम्न रक्तचाप में शीघ्र लाभ मिलता है।

दमा में अंजीर और गहरा श्वास– कलई किए हुए बर्तन में 3 अंजीर 24 घंटे तक पानी में भिगायें रखें। प्रातः अंजीर को उसी पानी में उबाल लें। सूर्योदय से पूर्व उठकर शौच, स्नानादि के बाद उगते सूर्य के सामने बैठकर गहरा श्वास प्रश्वास लें।

www.thearyasamaj.org

स्वतन्त्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका

गतांक से आगे–

– आशा रानी व्होरा

क्रान्ति का फैलाव

मंगल पाण्डे व अन्य विद्रोहियों को फांसी देने के बाद कुछ दिन शांति रही, किन्तु यह शांति अल्पजीवी थी। मेरठ में भी 85 विद्रोही सिपाहियों ने चरबी वाले कारतूसों के प्रयोग से इन्कार किया, तो इस अपराध में उन्हें लंबी कैद का दण्ड दिया गया। 9 मई को उन विद्रोहियों की परेड ली गयी और उन्हें बेइज्जती के साथ जेल में डाला गया। 10 मई की शाम को भारतीय सैनिकों ने खुले आम विद्रोह कर दिया। इस बारे में एक घटना दिलचस्प भी है और मार्मिक भी। 9 मई की शाम विद्रोही सैनिकों को जेल में भिजवा वफादार सैनिक जब घरों में लौटे, तो उनकी माताओं-बहनों, पत्नियों ने ही नहीं, राहगीर स्त्रियों ने भी उन पर तानाकशी की कि उन्होंने अपने भाइयों का नहीं, अंग्रेजों का साथ दिया। अगर उनमें पुरुषत्व होता, तो वे उन्हें जेल जाने से बचाते। अब भी उन्हें अपने भाइयों को छुड़ाने का प्रयत्न करना चाहिए, नहीं तो उसी रास्ते चलना चाहिए। कहते हैं, मेरठ के सैनिकों पर इसका गहरा मनोवैज्ञानिक असर पड़ा और उन्होंने क्रांति-तिथि तक प्रतीक्षा न कर अगले दिन 10 मई को ही विद्रोह कर दिया। इस तरह समय से पूर्व सैनिक विद्रोह द्वारा क्रांति की शुरुआत में मेरठ की महिलाओं का हाथ भी माना जाता है। यह अलग बात है कि क्रांति-विफलता के पीछे अन्य कारणों के साथ बिना पूरी तैयारी समय से पूर्व शुरुआत भी एक बड़ा कारण है। पर महिलाएं इसके प्रति बेखबर थीं। उन्होंने तो अपने पारम्परिक इतिहास को ही दुहराया था कि समय पर पीठ दिखाने वाले कायर सैनिकों की पीठ न ठोंकी जाएं, बल्कि उन्हें धिक्कार कर कर्त्तव्य की याद दिलाई जाए। इस दृष्टि से यहाँ मेरठ की उन महिलाओं की चूक नहीं, बहादुरी ही स्मरण की जाएगी।

विद्रोह की शाम सैनिकों ने जेल पर धावा बोल अपने विद्रोही साथियों को मुक्त कर लिया। यूरोपीय अधिकारियों को मार डाला। फिर बाजार लूटकर दिल्ली का रास्ता पकड़ा। दूसरे दिन वे लोग दिल्ली में थे, जहाँ दिल्ली के असंतुष्ट जन व सैनिक भी उनसे आ मिले और उन्होंने कुछ ही घण्टों में दिल्ली पर अधिकार कर बहादुरशाह को भारत का सम्राट् घोषित कर दिया। इसके साथ ही विद्रोह रुहेलखण्ड और मध्य भारत में भी फैल गया। बरेली, लखनऊ, बनारस, कानपुर, झांसी, कालपी विप्लव के केन्द्र बन गये। दिल्ली विद्रोह का मुख्य केन्द्र था, देश भर के विद्रोही दिल्ली की ओर चल पड़े और अन्तिम मुगल बादशाह बहादुरशाह की जय-जयकार करते हुए दिल्ली में प्रवेश कर गये। वहाँ के प्रायः सभी अंग्रेज मार डाले गये। खजाने लूट लिये गये। लाल किले पर बादशाह का झंडा फिर से लहरा उठा।

www.thearyasamaj.org

अंग्रेजों की अधीनता से पस्त बूढ़ा बहादुरशाह बागियों के दिल्ली पहुँचने पर पहले एकाएक तैयार नहीं हुआ था, क्योंकि मुगल खजाने तब खाली थे और अंग्रेजों जैसी बड़ी शक्ति से लोहा लेना आसान न था। लेकिन बागियों ने कहा, "आप तैयार हो जाइए। धन की चिन्ता न करें। अंग्रेजों के खजाने लूटकर धन हम ला देंगे।" बेगम जीनत महल ने भी क्रांतिकारियों का समर्थन किया और बहादुरशाह का हौसला बढ़ाया, तो वह अंग्रेजों से लड़ने के लिए तैयार हो गया। बहादुरशाह ने जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, अलवर आदि के राजाओं को पत्र लिखे कि वे अंग्रेजों के खिलाफ हथियार उठायें व उनका साथ दें। लेकिन राजपूताने के आनबान वाले राजा भी तब न जाने क्यों दूर से तमाशा देखते रहे। विद्रोह की दावाग्नि मेरठ, दिल्ली के बाद फैली बरेली, लखनऊ, बनारस, कानपुर, झांसी में। नतीजा- सभी राजाओं के साथ न देने से चार महीने बाद दिल्ली, आठ महीने बाद लखनऊ और कानपुर फिर गुलाम हो गये।

दिल्ली में हुए विद्रोह की सूचना पाकर निकल्सन के नेतृत्व में पंजाब से बड़ी सेना भेजी गयी। लखनऊ के जान लारेंस को भी विद्रोह दबाने का आदेश दे दिया गया। दिल्ली में विद्रोहियों का नेतृत्व बहादुरशाह के दोनों लड़कों के हाथ में था। अम्बाला का विद्रोह दबा, अंग्रेज सेना दिल्ली पहुँची, तो 'बागियों' ने फाटक बन्द कर अंग्रेजों पर गोलाबारी की। अंग्रेज सैनिकों को पीछे हटना पड़ा। उन्होंने यमुना नदी के रास्ते हमले की कोशिश की पर वहाँ भी 'बागियों की भयानक गोलाबारी का सामना उन्हें करना पड़ा। कोई चारा न देख अंत में निकल्सन ने बंद कश्मीरी दरवाजे पर लगातार गोले बरसाकर 14 सितंबर को उसे तोड़ दिया और टूटे दरवाजे से अंग्रेज सेना भीतर प्रवेश कर गयी। भीतर भी बहादुरशाह के सैनिकों से जमकर लड़ाई हुई, जिसमें सेनापति निकल्सन मारा गया। हडसन ने आकर कमान संभाली और जबरदस्त हमला किया। अब लड़ाई दिल्ली की सड़कों पर लड़ी जा रही थी। मंदिर-मस्जिद तक देशभक्तों के खून से लाल हो गये। बहादुरशाह के दोनों लड़के व पोता हडसन के हाथों मारे गये। दिल्ली का पतन हो गया।

इसके बाद जो क्रूर दमन-कार्रवाइयां चलीं, वे रोंगटे खड़े कर देने वाली थीं। अंग्रेजों ने विद्रोहियों से जमकर बदला लिया। हजारों निरपराध व्यक्ति मौत के घाट उतार दिये गये। महिलाओं के साथ अशोभनीय व्यवहार भी हुआ। अम्बाला से दिल्ली तक के रास्ते के अनेक गाँवों को जला दिया गया। लोगों को पकड़-पकड़कर वहीं पेड़ों पर लटका फांसी दे दी जाती, फिर लाशें वहीं लटकती छोड़ दी जातीं कि आतंक फैले। अधिक संख्या में लोगों को मारने के लिए कहीं पल्टन पूरे गाँव को चारों ओर से घेर उसमें आग लगा देती। जो बचकर भागता, उसे गोली मार दी जाती। गर्भवती स्त्रियाँ, दूध पिलाती माताएँ, बूढ़े, बच्चे किसी का भी लिहाज न था। सिवाय कुछ युवतियों के, जिन्हें वे पकड़ ले जाते। उनका भी बाद में न जाने क्या हश्र होता।

दिल्ली की खबर मिलते ही विद्रोह तेजी से उत्तर व मध्य भारत में फैल गया था। कानपुर में विद्रोहियों के नेता नाना साहब थे। उन्होंने अपने आपको पेशवा घोषित कर दिया और कानपुर में अंग्रेजों को घेर

www.thearyasamaj.org

लिया। तीन सप्ताह तक युद्ध चला। जून में जनरल नील ने इलाहाबाद के किले पर अधिकार कर लिया। फिर वह कर्नल हैवलाक के साथ कानपुर की ओर बढ़ा। इसके पूर्व ही कानपुर में अंग्रेज नाना साहब के समक्ष आत्मसमर्पण कर चुके थे। जानबख्शी पाकर वे नावों पर सवार हो इलाहाबाद के लिए निकले, परन्तु नावों में विद्रोहियों ने आग लगा दी और उन पर गोलियाँ चलायीं। बचे सैनिकों को नाना साहब ने शरण दी। फिर पीछे से अंग्रेजी फौज के आने का समाचार पा विद्रोहियों ने इन्हें भी मारकर लाशें कुंओं में फेंक दीं। पर नील और हैवलाक के पहुँचने पर इस संयुक्त मोर्चे ने कानपुर पर फिर कब्जा कर लिया। नाना की पालिता बेटी मैना भी इसी दौरान जीवित जला दी गई। नाना साहब को वहाँ से भागना पड़ा। इसके बाद अंग्रेज सैनिकों ने कानपुर में बदले की कार्रवाई में बहुत जुल्म ढाये।

लखनऊ में भी विद्रोह की ज्वाला प्रचण्ड थी। हेनरी लारेंस ने कुछ समय तक लखनऊ की रक्षा की, फिर वह मारा गया और विद्रोहियों ने लखनऊ पर अधिकार कर लिया। कर्नल हैवलाक ने जनरल आउट्रम की सहायता से विद्रोहियों को रोका, किन्तु दिल्ली से वहाँ पहुँचे विद्रोहियों ने उन्हें घेर लिया। अंत में सर कैम्पवेल के नेतृत्व में एक बड़ी सेना लखनऊ जीतने के लिए भेजी गयी। कैम्पवेल ने कानपुर में तात्या टोपे का दमन किया, लौटकर लखनऊ शहर पर अधिकार करने में भी सफल हुआ। उसी ने फिर लखनऊ से बरेली जाकर वहाँ के विद्रोहियों को भी दबाया।

इस बीच 5 जुलाई 1857 को बेगम हजरत महल ने लखनऊ पर वापस कब्जा करके अपनी सेना का पुर्नगठन कर लिया था। 16 जुलाई को उन्होंने अंग्रेजों की छावनी बेलीगारद पर जोरदार हमला किया। उनके विद्रोही सैनिकों ने फैजाबाद के देशभक्त स्वातंत्र्य सैनिक मौलवी अहमद उल्ला शाह को जेल से मुक्त कर अपना नेता बना लिया था। उन्होंने 21 सितम्बर को आलमबाग में अंग्रेजों को भारी शिकस्त दी। इसके बाद योजना थी, कलकत्ता के फोर्ट विलियम को उड़ा अवध के नवाब को वहाँ से छुड़ा लाने की, लेकिन कुछ विश्वासघातियों के कारण योजना विफल हो गयी थी और 15 फरवरी 1858 को अहमद शाह के घायल होने के बाद, बेगम हजरत महल व उनकी महिला-सेना के बहादुरी से लड़ने के बावजूद, मार्च में अंग्रेजों ने लखनऊ को वापस अपने अधिकार में ले लिया था।

मध्य भारत में विद्रोह के दो प्रमुख नेता थे– तात्या टोपे और झांसी की रानी लक्ष्मीबाई। तात्या टोपे ने कालपी से चलकर कानपुर में जनरल बिन्डहेम को हराया, किन्तु कैम्पबेल ने वहाँ पहुँचकर तात्या टोपे को परास्त कर दिया था। झांसी में रानी लक्ष्मीबाई खूब बहादुरी से लड़ीं। फिर तात्या टोपे और रानी झांसी ने अपने ठिकानों से निकलकर भी विद्रोह जारी रखा। सर ह्यूरोज ने तात्या टोपे को बेलवा के युद्ध में हरा दिया। तात्या और रानी लक्ष्मीबाई दोनों ग्वालियर की ओर बढ़े। ग्वालियर के राजा सिंधिया ने साथ न दिया, पर उसकी विद्रोही सेना की मदद से इन्होंने ग्वालियर पर अधिकार कर लिया। जीत के

www.thearyasamaj.org

कुछ समय बाद ही सर ह्यूरोज ने ग्वालियर पर धावा बोल दिया। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई इस युद्ध में वीर-गति को प्राप्त हुई। तात्या टोपे पकड़े गये, उन्हें फांसी दे दी गयी। (इस बात पर खोजकर्त्ताओं ने प्रश्नचिह्न लगाया है कि जिस व्यक्ति को उस समय फांसी दी गई वह तात्या टोपे नहीं थे)। नाना साहब नेपाल के जंगलों में भाग गये थे। उसके बाद फिर उनका कुछ पता नहीं लगा।

इस विद्रोह में बम्बई, मद्रास शामिल नहीं हुए थे। तात्या टोपे नर्मदा पार कर दक्षिण की ओर बढ़े थे, पर पूर्व तैयारी के बिना दक्षिण में विद्रोह सफल नहीं हुआ था। अम्बाला के विद्रोह को छोड़कर पंजाब ने भी क्रांतिकारियों का साथ नहीं दिया और सिक्ख पलसें अंग्रेजों की ओर से लड़ती रहीं। इसी तरह नेपाल का राजा भी अंग्रेजों का मित्र बन गया और गोरखा सैनिक अंग्रेजों की ओर से लड़ते रहे। पर बिहार में जगदीशपुर के 80 वर्षीय वृद्ध राजा कुंवरसिंह ने अंग्रेजों के आवागमन के रास्ते बन्द कर दिये थे। उनकी संचार-व्यवस्था नष्ट कर दी थी। वहाँ अद्वितीय छापामार युद्ध लड़ा गया, जो बाद में गुरिल्ला युद्ध के लिए एक मिसाल बना।

दक्षिण और महाराष्ट्र में पूना, सतारा, धारवाड़, बेलगांव, हैदराबाद, मैसूर की लगभग सभी छावनियों में विद्रोह की लहर पहुँची– पर उत्तर भारत की तरह एकाएक उसका फैलाव नहीं हुआ। दक्षिण में ये विद्रोह रुक-रुककर हुए, जिसका लाभ फिरंगियों को मिला। यदि ये सारे राज्य एक साथ उठ खड़े होते, तो देश तभी आजाद हो गया होता। कोल्हापुर की पलटन ने 31 जुलाई को अंग्रेजों को मार खजाने पर कब्जा कर लिया था। इन विद्रोहियों ने तोप के मुंह पर बंधे हुए भी अपने नेताओं के नाम नहीं बताए थे। 10 अगस्त को बेलगांव में भी विद्रोह का झंडा उठा। पूना में विद्रोही सिपाहियों ने मराठा राज्य घोषित करने व नाना साहब को पेशवा बनाने की योजना बना ली थी। इस योजना का भेद खुल गया और निश्चित दिन से पहले ही गिरफ्तारियां हो गयीं। विद्रोही नेता फांसी चढ़ा दिये गये या निर्वासित कर दिये गये। नागपुर ने 13 जून का दिन चुना था, पर उसी समय मद्रासी पलटन ने आकर चिनगारी दबा दी। हैदराबाद के निजाम ने भी गद्दारी की। निजाम का मंत्री सालारजंग अंग्रजों का पिट्ठू था, तो निजाम ने खतरा मोल न लिया। वहाँ विद्रोह की आवाज उठी। मस्जिदों में गुप्त बैठकें हुईं। 17 जुलाई को 'दीनदीन' की आवाजों के साथ निजाम के रोहिला सिपाहियों ने 500 नागरिकों के साथ रेजीडेंसी पर हमला किया। लेकिन सालारजंग की मदद से अंग्रेजों ने विद्रोह को जल्दी ही दबा दिया। पर हैदराबाद के पास ही छोटी-सी रियासत जोरापुर के राजा ने विद्रोहियों का साथ दिया। अरब-रोहिला-पठान सेना, मौलवी और रायचूर व अर्काट के ब्राह्मण विद्रोही सेना में साथ-साथ थे। पर यहाँ भी सालारजंग ने उन्हें गिरफ्तार कर अंग्रेजों को सौंप दिया। राजा को कालेपानी की सजा दी गयी, जहाँ उसने स्वयं को गोली मार ली। अर्काट के गोपाल दुर्ग पर झंडा फहराते कुछ महिलाएं भी शहीद हुई थीं, जिनके बारे में आगे लिखा जा रहा है।

●

(क्रमशः)

www.thearyasamaj.org

हम भारत से क्या सीखें?

द्वितीय भाषण

– प्रो० मैक्समूलर

हिन्दुओं का चरित्र–

(पूर्व अंक का शेष)

हिन्दुओं के विषय में हममें अनेक भ्रान्त एवम् विपरीत धारणाएँ बद्धमूल हो गयी हैं जब कि हिन्दुओं का सामान्य विवरण देते हुए वारेन हेस्टिंग्ज ने कहा है कि– "वे सीधे और उपकारक होते हैं, यदि उनके साथ कुछ दयालुता की गयी तो वे उसके प्रति पूर्ण कृतज्ञ[1] होते हैं और यदि उनके साथ कोई कुछ बुराई भी कर देता है तो जिस प्रकार वे लोग उन बुराइयों के प्रति समाभाव प्रदर्शित कर देते हैं, वैसा पृथ्वीतल के किसी भी देश का निवासी नहीं कर सकता। वे स्वामिभक्त, प्रेमी तथा वैधानिक अधिकारियों के आज्ञापालक होते हैं।"

1. भारतीयों के आचार का विवरण देते हुए चीनी यात्री ह्वेनसांग लिखता है कि "भारतीयों के प्रति सेवा का कोई भी कार्य कर देने वाला व्यक्ति उनकी कृतज्ञता का सदा विश्वास कर सकता है, परन्तु उनका अपराध करने वाला उनके प्रतिशोध से बच भी नहीं सकता। उनका अपमान करने पर वे अपना कलंक मिटाने के लिये प्राणों की बाजी लगा देते हैं। यदि कोई कष्ट में पड़ा हो और हिन्दुस्तानी से सहायता माँगे तो वे अपने आपको भी भूल कर उसकी सहायता के लिये दौड़ पड़ते हैं। जब वे प्रतिशोध लेना चाहते हैं तो वे विरोधी को सचेत कर देने से चूकते नहीं। युद्ध में भागने वालों का वे पीछा तो करते हैं, परन्तु शरणागत की रक्षा अपना मुख्य धर्म समझते हैं।"

इसी विषय पर लिखते हुए विशप हेबर का कहना है कि– "हिन्दू[2] लोग बहादुर, शिष्टाचारी बुद्धिमान्, जिज्ञासु तथा सुधार प्रेमी होते हैं उनमें गम्भीरता, अध्यवसाय, कर्तव्यनिष्ठा, पितृ प्रेम वात्सल्य, धैर्य ऊँचे पैमाने पर होते हैं। दयालुता का उन पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। उपरोक्त सभी गुणों में वे पृथ्वी के उन सभी मनुष्यों से बढ़े हुए हैं, जिन्हें जानने सुनने का अवसर मुझे मेरे सारे जीवन में मिला है।"

एलर्फिस्टन का भी ऐसा ही कथन है– "हिन्दुओं में किसी भी वर्ग में ऐसे गिरे हुए लोग नहीं होते, जैसे गिरे हुए लोग हमारे नगरों में होते हैं। भारत के ग्रामीण निरपवाद रूप से सौहार्द्र पूर्ण होते हैं, अपने परिवार के प्रति प्रेम भाव रखने वाले होते हैं, अपने पड़ोसियों के प्रति दयालु बने रहना उनकी विशेषता है तथा सरकार को छोड़ कर शेष सबके प्रति ईमानदार

1. हिन्दुओं के विषय में श्री क्रिडल की धारणा भी स्मरणीय है "हिन्दुओं के चरित्र की निष्कपटता तथा उनकी ईमानदारी उनकी मुख्य पहचान है। वे कभी भी अनीति युक्त वचन नहीं बोलते।"

इसी विषय में बर्नार्डशा को भी देखें, "भारतीयों की मुखाकृति में जीवन के प्रकृत रूप का दर्शन होता है। हम तो कृत्रिमता का आवरण ओढ़े हुए हैं। भारतीय मुखमण्डल की सुकुमार रेखाओं में ही कर्ता के करांगुष्ठ की छाप दिखायी पड़ती है।" – **अनुवादक**

www.thearyasamaj.org

और सच्चे होते हैं। यदि भारतीय ठगों और डाकुओं को भी सम्मिलित कर लिया जाय तो भी भारत में कुल मिलाकर उतने जुर्म नहीं होते, जितने हमारे छोटे से देश (इंग्लैण्ड) में होते हैं। ठगों की तो एक अलग जाति ही है। न्याय से निराश होकर कुछ लोग डाकूदल भी बना लेते हैं। अन्यथा सामान्य रूप से हिन्दू जन नम्र और सज्जन प्रकृति के लोग हैं। बन्दियों के प्रति जितनी दया माया भारतीयों में है, उतनी एशिया महादेश के किसी भी जाति में नहीं है। वे सामूहिक रूप से अनीति एवं अनाचार से दूर रहते हैं और उनका यह गुण उनके लिये बड़ा सुविधाजनक होता है। यदि हम उनके शिष्टाचार की उच्चता को समझ सकें तो हमें अपने में कोई ऐसा शिष्टाचार न दिखायी पड़ेगा, जिस पर हम गर्व कर सकें।''

आप लोग यह न समझ लें कि एलफिस्टन ने भाट की तरह भारतीयों की प्रशंसा ही की है। इसके विपरीत यत्र-तत्र उसने भारतीयों की बुराइयों की कड़ी निन्दा भी की है। आगे चल कर उसने लिखा है कि– ''इस समय भारतीयों में ईमानदारी की काफी कमी आ गयी है परन्तु यह बुराई उन्हीं लोगों तक सीमित है कि जो हमारी सरकार से सम्बन्धित हैं। भारत में लगान निर्धारण एवम् वसूली की जो पद्धति है उसमें विवश होकर किसानों को शक्ति का सामना छल प्रपंच से करना ही पड़ता है।''

सर जान मालकम लिखता है कि ''जब कभी भी ऐसा अवसर आया है कि देशी लोगों से कोई बात ठीक-ठीक ढंग से उन्हीं की भाषा में सुपरिचित अधिकारी द्वारा पूछी गयी है तो हमेशा ही यही पता चला है कि भारतीयों ने या तो भय के कारण असत्य भाषण किया है या बेसमझी के कारण। मैं यह कहना तो नहीं चाहूँगा कि भारतीय प्रजा में अपने समान स्तर के किसी भी देश की प्रजा से कम बुराई है, परन्तु मुझे पूर्ण निश्चय है कि वे असत्य भाषण का सहारा लेने में किसी भी जाति से आगे नहीं हैं।''

सर थामस मनरो द्वारा दी गयी साक्षी तो और भी सशक्त है। वे लिखते हैं कि ''यदि खेती की उत्तम प्रणाली उत्पादन का अद्वितीय गुण, सुविधाजनक तथा आरामदे वस्तुओं के उत्पादन की क्षमता पढ़ना, लिखना एवम् प्रारम्भिक गणित सिखाने के लिये गाँव-गाँव में खुली पाठशालाएँ आपस का सौहार्द्रपूर्ण व्यवहार एवम् उदारतापूर्ण अतिथि सत्कार और सबसे बढ़कर नारी जाति का सम्मान[1] जिसमें आत्म विश्वास, आदर और नम्रता का सम्मिश्रण हो, इत्यादि गुणों से ही कोई जाति सभ्य कही जा सकती है, तो हिन्दू लोग किसी भी यूरोपीय जाति से कम सभ्य नहीं हैं। यदि यूरोप और भारत के बीच सभ्यता का व्यापारिक रूप से आयात-निर्यात होना सम्भव हो तो मुझे विश्वास है कि भारत से यूरोप को बहुत कुछ आयात करना पड़ेगा। यही दशा हमारे देश इंग्लैण्ड की भी होगी।''

यह सत्य है कि भारतीयों के राष्ट्रगत चरित्र का

1. आज के मिथ्या प्रचारक चाहे जो कह लें परन्तु आज भी भारत की नारियों को जो सम्मान प्राप्त है वह अन्य कहीं भी दुर्लभ है। हमारा आदर्श ही यह रहा कि– ''एकचक्रो रथो यद्वदेकपक्षो यथा खगः। आभर्योऽपि नास्तद्वदयोग्यः सर्वकर्मसु।

www.thearyasamaj.org

ज्ञान प्राप्त करने के सीमित अवसर ही मुझे मिल सके हैं। सम्भव है कि जिन भारतीय सज्जनों से मिलने का अवसर मुझे मिल सका है, उन्हें आप विशिष्ट श्रेणी के व्यक्ति मानकर यह कहें कि भारत के सभी लोग इस प्रकार के नहीं होते। यह भी सत्य है कि उन सज्जनों से मेरा जो वार्तालाप हुआ है, उसमें उनके चरित्र का अवांछनीय पक्ष मेरी दृष्टि में न आया हो। परन्तु पिछले बीस वर्षों में अनेक भारतीय छात्रों को देखने परखने के अवसर मुझे मिले हैं और मेरा विश्वास है कि उन अवसरों पर उनके चरित्र की त्रुटियों को भाँप सकना मेरे लिये सर्वथा सम्भव रहा है। साहित्यक आदान-प्रदानों में विशेष कर साहित्यिक विरोधों में अनेक भारतीय विद्वानों एवम् छात्रों से मेरा संसर्ग हुआ है। मैंने उन्हें तब भी परखा है जब वे आपस में ही एक दूसरे का विरोध कर रहे थे और उस समय भी उन्हें परखा है जब उनका मत किसी यूरोपीय विद्वान् के मत के विपरीत जा पड़ा है। इन सभी विरोध वार्ताओं में संलग्न भारतीयों को देखकर मैं यह कहने को बाध्य हूँ कि केवल एक बार को छोड़ कर प्रत्येक बार भारतीयों ने सत्य के प्रति जो समादर प्रदर्शित किया है वह हमारे यूरोप तथा अमेरिका में सदा और सर्वत्र नहीं दिखायी पड़ता। उनके तर्कों में शक्ति थी पर असभ्यता नहीं? वास्तविकता तो यह है कि मुझे सर्वाधिक आश्चर्य तब हुआ जब मैंने देखा कि वे विद्वान् भारतीय संस्कृत के उन विद्वानों को देखकर स्वयम् विस्मय विमूढ़ हो उठे जो शास्त्रार्थ काल में असंयत भाषा का व्यवहार करने लगते थे या जब कभी उत्तेजित हो उठते थे, क्योंकि उनके विचार से असंयत भाषा न केवल अयोग्य पैत्रिकता का ही लक्षण होती है वरन् अज्ञान का भी। मानव प्रकृति के विषय में भारतीयों का ऐसा ही दृष्टिकोण है। वाद-विवाद में जब भी उनको पता चल जाता कि उनका पक्ष गलत है तो वे झट अपनी कमजोरी को स्वीकार कर लेते थे साथ ही यदि उन्हें निश्चय रहे कि उनका पक्ष न्यायसंगत है तो वे किसी भी यूरोपीय या अमेरिकी विरोधी की पर्वाह नहीं करते थे। कुछ अपवादों को छोड़कर कभी भी किसी भारतीय ने सत्यपक्ष को नहीं छोड़ा, व्यर्थ का वाद विवाद नहीं किया और न कभी असत्य को सत्य सिद्ध करने का प्रयत्न किया। आज हमीं में ऐसे भी विद्वान् हैं, ऐसे भी पुस्तक प्रकाशक हैं जो किसी बात को जानते हैं कि वह असत्य है, फिर भी केवल दलीलों के बल पर या उसे ही सत्य सिद्ध करके गर्व से सीना फुलाये घूमते हैं। उस क्षेत्र में भी हम भारत से बहुत कुछ आयात कर सकते हैं।

इसी स्थान पर मैं भी इतना जोड़ दूँ कि स्वयम् हमारे ही देश के अनेक बड़े व्यापारियों ने मुझसे कहा है कि भारतीय व्यापारियों में व्यापारिक सम्मान की भावना अत्यधिक ऊँची होती है और शायद ही कभी कोई हुंडी ऐसी हो जिसका भुगतान पूरी ईमानदारी के साथ तुरन्त न कर दिया गया हो। उनका कहना है कि जाली हुण्डियों का यहाँ पर नाम ही नहीं है।

●

(क्रमशः)

www.thearyasamaj.org

पतंजल महिला योग समिति द्वारा महिला सशस्त्रीकरण दिवस पर आयोजित संगोष्ठी में अध्यक्ष पद से सम्बोधित करती हुई आचार्या नन्दिता शास्त्री

तिरूमल तिरूपति देवस्थानम् द्वारा आयोजित का.हि.वि. स्थित बिड़ला मंदिर में गायन प्रस्तुति करतीं आचार्या जी के निर्देशन में ब्रह्मचारिणियाँ

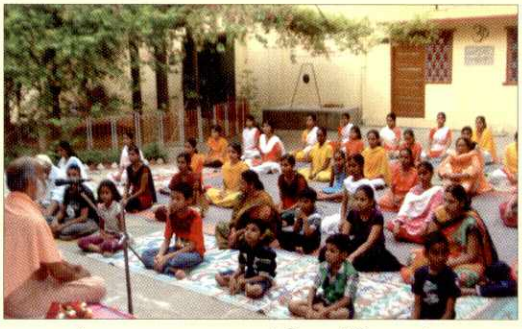

5 से 10 जून तक आयोजित वैदिक संस्कृत संस्कृति प्रशिक्षण शिविर में योग प्रशिक्षण कराते हुए – पू. आनन्द स्वामी जी

वैदिक संस्कृत संस्कृति प्रशिक्षण शिविर के समापन समारोह के अवसर पर
– डॉ. कृष्णकान्त शर्मा एवं गणमान्य

15 अगस्त स्वततंत्रा दिवस पर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करती हुई ब्रह्मचारिणियाँ

2–8 अक्टूबर तक लायन्स क्लब वाराणसी "रायल" एवं "गोल्ड" द्वारा आयोजित सेवा साप्ताह में वृक्षारोपण करते मुख्य अतिथि ला.डॉ. कुमुद रंजन एवं अन्य पदाधिकारीगण

www.thearyasamaj.org

विद्यालय की प्राचार्या को उनके जन्मदिवस पर मसूरी में अपने स्नेहाशीष से अभिसिंचित करते प्रभुभक्त वयोवृद्ध श्री परमात्मा शरण आर्य एवं धर्मपत्नी सरला जी

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ में सुलभ इण्टरनेशनल द्वारा आयोजित "विधवा जीवन बिना अपराध कारावास" विषयक संगोष्ठी का दृश्य

आर्य समाज मुम्बई में पदाधिकारियों से सम्मान प्राप्त करतीं तथा उद्‌बोधन देती हुईं आचार्या नन्दिता शास्त्री

विद्यालय में आयोजित "मल्हार के रंग" कार्यशाला में मंचासीन वरिष्ठ कलाकार (ऊपर)
कार्यक्रम की मुख्य अतिथि
श्रीमती सीमा तिवारी को सम्मनित करतीं आचार्या

विद्यालय में आयोजित कार्यशाला "मल्हार के रंग" के समापन अवसर पर दीप प्रज्ज्वलित करते माननीय मनोज राय धूपचंडी (राज्यमंत्री)